पुस्तक की सामग्री

प्राचीन काल में जन्मे दार्शनिक (550 ईसा पूर्व से पहले)

कन्फ्यूशियस 5
पॉलीबियस 12
अरस्तू 18
सुकरात 25
सिसरो 31
प्लेटो 38
संत ऑगस्टीन 45

मध्यकालीन में जन्मे दार्शनिक (550 - 1450 ईस्वी)

सेंट थॉमस एक्विनास 53
अल - फराबी 60
अबू हामिद मुहम्मद अल - गज़ाली 67
मूसा माइमोनाइड्स 73
इब्न खलदून 81
दांते एलिघिएरी 88
मार्सिलियस ऑफ पादुआ 96
एविसेना 102
एवरोज़ (इब्न रुश्द) 108
विलियम ऑफ ओखम 115
जॉन ऑफ सैलिसबरी 122

पुनर्जागरण और प्रारंभिक आधुनिक काल में जन्मे दार्शनिक (1450 - 1750 ईस्वी)

निकोलस मैकियावेली 130
थॉमस हॉब्स 138
जॉन लॉक 145
जीन - जैक्स रूसो 154
बारूक स्पिनोज़ा 163
ह्यूगो ग्रोटियस 179
जीन बोडिन 172
सैमुअल पुफेंडोर्फ 180
जेम्स हैरिंगटन 188
मोंटेस्क्यू 196
रिचर्ड हूकर 204
फ्रांसिस बेकन 212
गियाम्बतिस्ता विको 221
जोहान्स अल्थुसियस 230
एडवर्ड कोक 238
मार्टिन लूथर 246

इमानुएल कांत 254
वॉल्टेयर 262
एडम स्मिथ 270
थॉमस पेन 277
जेरेमी बेंथम 285

उत्तर आधुनिक काल में जन्मे दार्शनिक (1750 - 1900 ईस्वी)

जॉन स्टुअर्ट मिल 294
कार्ल मार्क्स 304
जॉर्ज विल्हेम फ्रेडरिक हेगेल 313
मैरी वोल्स्टनक्राफ्ट 321
एंटोनियो ग्राम्स्की 329
हर्बर्ट मार्क्यूस 339
फ्रेडरिक एंगेल्स 346
एलेक्सिस डी टोकेविल 354
अगस्टे कॉम्टे 364
जॉन डेवी 371
एम्मा गोल्डमैन 380
व्लादिमीर लेनिन 388
जोसेफ स्टालिन 396
हिप्पोलीटे टेन 404
थॉमस हिल ग्रीन 410
हर्बर्ट स्पेंसर 414
हेनरी डेविड थोरो 420
विलफ्रेडो पारेटो 426
एल.टी. हॉबहाउस 432
एच.जे. लास्की 438
एरिच फ्रॉम 445
जोसेफ शुम्पेटर 455
रुडोल्फ रॉकर 462
एडुआर्ड बर्नस्टीन 468
मिखाइल बाकुनिन 474
फ्रेडरिक नीत्शे 480
जॉर्जेस सोरेल 487
पीटर क्रोपोटकिन 493
बर्ट्रेंड रसेल 500

पुस्तक की सामग्री (जारी)

उत्तर आधुनिक काल में जन्मे दार्शनिक (1750 - 1900 ईस्वी)

हेनरी डी सेंट साइमन 4

रॉबर्ट ओवेन 11
जॉन मेनार्ड कीन्स 19
रोजा लक्जमबर्ग 28
पियरे - जोसेफ प्राउडॉन 37
जेम्स मिल 46
जोसेफ मैजिनी 53
चार्ल्स फूरियर 59
थॉमस कार्लाइल 65
लॉर्ड एक्टन 71
विलियम ग्राहम समनर 77
वाल्टर बेंजामिन 83
फ्रेडरिक हायेक 90
कार्ल श्मिट 97

20वीं सदी में जन्मे दार्शनिक

हन्ना एरेंड्ट 105
जॉन रॉल्स 113
फ्रांत्स फैनन 121
माओ ज़ेडोंग 128
मिशेल फूको 135
नोम चॉम्स्की 143
एडवर्ड सईद 151
जुर्गन हैबरमास 160
जुडिथ बटलर 169
लुई अल्थुसर 179
रॉबर्ट नोज़िक 187
ज़िग्मुंट बॉमन 195
ईसाई बर्लिन 205
माइकल सैंडेल 215
गाय डेबॉर्ड 223
रेमंड एरॉन 232
एरिक वोगेलिन 241
चार्ल्स टेलर 250
बर्नार्ड विलियम्स 259
जैक्स डेरिडा 268
अली शरियाती 278
सैमुअल पी. हंटिंगटन 287
स्लावोज ज़िज़ेक 295
आर.एम. मैकआइवर 306
सी.बी. मैकफर्सन 314
जीन - फ्रांकोइस ल्योटार्ड 322
मिल्टन फ्रीडमैन 330
गेराल्ड सी. मैककैलम 339
डी.डी. राफेल 345
माइकल यंग 351

रेचल कार्सन 359
माइकल वाल्ज़र 366
गैरेट हार्डिन 375
डेविड मिलर 382
एलेसडेयर मैकिनटायर 389
मार्टिन लिपसेट 397
जॉर्ज लुकाच 405
आइरिस मैरियन यंग 413
हर्मन ई. डेली 421
एडवर्ड गोल्डस्मिथ 430
पीटर सिंगर 438
हेरोल्ड लासवेल 446
डेविड ईस्टन 454
गेब्रियल आलमंड 461
रॉबर्ट डाहल 469

"प्राचीन (550 ईस्वी से पहले जन्मे हुए)"

कन्फ्यूशियस: प्राचीन चीन के ऋषि

कन्फ्यूशियस (孔子, कोन्ग फ़ूज़ि, "मास्टर कोन्ग") एक पूजनीय चीनी दार्शनिक, शिक्षक और राजनीतिक सिद्धांतकार थे जिनके विचारों ने चीनी, कोरियाई, जापानी और वियतनामी संस्कृति और विचार को गहराई से प्रभावित किया। प्राचीन चीन में महान सामाजिक और राजनीतिक उथल-पुथल के दौर में रहते हुए, उन्होंने नैतिक आत्म-विकास, नैतिक नेतृत्व और उचित सामाजिक आचरण के माध्यम से व्यवस्था और सद्भाव को बहाल करने की मांग की। उनके शिष्यों द्वारा संकलित उनकी शिक्षाएँ, कन्फ्यूशियसवाद की नींव बनीं, एक व्यापक दार्शनिक प्रणाली जिसने दो सहस्राब्दियों से अधिक समय तक पूर्वी एशियाई सभ्यता को आकार दिया।

1. जन्म और मृत्यु की तिथि

- जन्म: लगभग 551 ईसा पूर्व, क़ुफ़ू (曲阜), लू राज्य (魯國) में, प्राचीन चीन के वसंत और शरद ऋतु काल (春秋時代) के दौरान।
- मृत्यु: लगभग 479 ईसा पूर्व, क़ुफ़ू, लू राज्य में।

2. दार्शनिक, राजनीतिक, या वैचारिक प्रभाव

कन्फ्यूशियस वसंत और शरद ऋतु काल (लगभग 771-476 ईसा पूर्व) के दौरान रहते थे, एक ऐसा समय जो इसकी विशेषता थी:

- झोउ राजवंश का पतन: झोउ राजवंश का केंद्रीय अधिकार ध्वस्त हो गया था, जिससे प्रतिद्वंद्वी सामंती राज्यों के बीच विखंडन और लगातार युद्ध हुए।
- नैतिक पतन: पुराने अभिजात्य मूल्य कम हो रहे थे, और राजनीतिक शक्ति तेजी से पुण्य और परंपरा के बजाय क्रूर बल और चालाकी पर आधारित थी।
- व्यवस्था का अभाव: एक मजबूत केंद्रीय सरकार और व्यापक संघर्ष की कमी से सामाजिक अव्यवस्था और पीड़ा हुई।

कन्फ्यूशियस प्रारंभिक पश्चिमी झोउ राजवंश (लगभग 1046-771 ईसा पूर्व) के आदर्शों से गहराई से प्रभावित थे, जिसे वे शांति, समृद्धि और नैतिक शासन का एक सुनहरा युग मानते थे। उनका मानना था कि प्राचीन ऋषि राजाओं का ज्ञान और झोउ के स्थापित अनुष्ठान (ली) व्यवस्था बहाल करने की कुंजी थे। उन्होंने पूरी तरह से नई अवधारणाओं को पेश नहीं किया बल्कि प्राचीन परंपराओं की पुनर्व्याख्या और उन्हें पुनर्जीवित किया, उनमें एक मजबूत नैतिक और मानवीय जोर डाला।

3. प्रमुख राजनीतिक विचार, सिद्धांत या अवधारणाएँ

कन्फ्यूशियस का राजनीतिक दर्शन उनकी नैतिकता से अविभाज्य रूप से जुड़ा हुआ है, जो अच्छे शासन के लिए नैतिक आत्म-विकास पर जोर देता है।

क. रेन (仁 - परोपकार/मानवता)

- परिभाषा और व्याख्या: यह कन्फ्यूशियसियन नैतिकता का आधारशिला है। रेन आदर्श मानवीय गुणवत्ता को संदर्भित करता है, जिसमें परोपकार, करुणा, सहानुभूति और परोपकार शामिल हैं। इसका अर्थ है "दूसरों से प्यार करना" और दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना जैसा आप अपने साथ कराना चाहते हैं ("जो आप अपने साथ नहीं चाहते, वह दूसरों के साथ न करें")।
- राजनीतिक प्रासंगिकता: कन्फ्यूशियस के लिए, एक शासक को प्रभावी ढंग से शासन करने के लिए अपने भीतर रेन विकसित करना चाहिए। एक परोपकारी शासक सम्मान और वफादारी को प्रेरित करता है, जिससे एक सामंजस्यपूर्ण समाज बनता है।

ख. ली (禮 - औचित्य/अनुष्ठान/रीति-रिवाज)

- परिभाषा और व्याख्या: ली जीवन के सभी पहलुओं में स्थापित अनुष्ठानों, समारोहों, सामाजिक रीति-रिवाजों और उचित आचरण को संदर्भित करता है, राज्य समारोहों से लेकर व्यक्तिगत बातचीत तक। यह व्यवस्थित मानवीय संबंधों के लिए एक ढांचा प्रदान करता है और एक सभ्य समाज के नैतिक मानदंडों का प्रतीक है।
- राजनीतिक प्रासंगिकता: ली समाज में व्यवस्था और शिष्टाचार लाता है। जब लोग अपनी भूमिकाओं को जानते हैं और उचित रीति-रिवाजों के अनुसार व्यवहार करते हैं, तो समाज सुचारू रूप से कार्य करता है, और संघर्ष कम हो जाते हैं। एक शासक को ली का पालन करके नेतृत्व करना चाहिए।

ग. यी (義 - धार्मिकता/न्याय)

- परिभाषा और व्याख्या: यी नैतिक रूप से उचित तरीके से कार्य करने का अर्थ है, सही काम इसलिए करना क्योंकि यह सही है, न कि व्यक्तिगत लाभ या सुविधा के लिए। यह अच्छा करने की नैतिक प्रवृत्ति है।
- राजनीतिक प्रासंगिकता: एक शासक और अधिकारियों को यी के साथ कार्य करना चाहिए, व्यक्तिगत हित या शक्ति के बजाय नैतिक सिद्धांतों और सामान्य भलाई के आधार पर निर्णय लेना चाहिए।

घ. ज़ही (智 - ज्ञान/जानकारी)

- परिभाषा और व्याख्या: ज़ही सही और गलत को समझने, रेन, ली, और यी के सिद्धांतों को समझने और उन्हें व्यावहारिक स्थितियों में सही ढंग से लागू करने की क्षमता है।
- राजनीतिक प्रासंगिकता: शासकों और अधिकारियों को राज्य के लिए न्यायपूर्ण और प्रभावी निर्णय लेने के लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है।

ङ. शिन (信 - निष्ठा/विश्वसनीयता)

- परिभाषा और व्याख्या: शिन का अर्थ है अपने वचन पर खरा उतरना, विश्वसनीय और भरोसेमंद होना। यह स्थिर संबंध बनाने के लिए महत्वपूर्ण है।
- राजनीतिक प्रासंगिकता: एक सरकार की वैधता उसके लोगों के विश्वास पर निर्भर करती है। शासकों को भरोसेमंद होना चाहिए, और उनके वादों को पूरा किया जाना चाहिए।

च. ज़ेंग मिंग (正名 - नामों का सुधार)

- परिभाषा और व्याख्या: यह सिद्धांत बताता है कि चीजें और लोग अपने नामों या शीर्षकों के अनुरूप होने चाहिए। एक "शासक" को एक शासक की तरह कार्य करना चाहिए, एक "प्रजा" को एक प्रजा की तरह, एक "पिता" को एक पिता की तरह, और एक "पुत्र" को एक पुत्र की तरह। यदि नामों को "सुधारा" नहीं जाता है (यानी, यदि कार्य शीर्षकों से मेल नहीं खाते हैं), तो भाषा अपना अर्थ खो देती है, और समाज अराजकता में डूब जाता है।
- राजनीतिक प्रासंगिकता: यह सामाजिक और राजनीतिक पदानुक्रम के भीतर अपनी निर्धारित भूमिका और जिम्मेदारियों को पूरा करने के महत्व पर जोर देता है। यह स्पष्टता व्यवस्था के लिए आवश्यक है।

छ. दे (德 - पुण्य/नैतिक शक्ति) और पुण्य द्वारा शासन (德治)

- परिभाषा और व्याख्या: दे एक शासक की नैतिक शक्ति या पुण्य को संदर्भित करता है। कन्फ्यूशियस का मानना था कि शासन करने का सबसे अच्छा तरीका कठोर कानूनों और दंडों के माध्यम से नहीं, बल्कि शासक के नैतिक उदाहरण और गुणी प्रभाव के माध्यम से था।
- राजनीतिक प्रासंगिकता: "पुण्य द्वारा शासन" का अर्थ है कि यदि शासक पुण्यात्मा है और ईमानदारी से कार्य करता है, तो लोग स्वाभाविक रूप से उसका पालन करेंगे और अच्छे होंगे। जैसा कि कन्फ्यूशियस ने कहा, "यदि आप लोगों को नियमों के माध्यम से नियंत्रित करते हैं और दंड के माध्यम से उनके बीच व्यवस्था बनाए रखते हैं, तो वे आपसे भाग जाएंगे, और सभी आत्म-सम्मान खो देंगे। यदि आप उन्हें पुण्य के माध्यम से नियंत्रित करते हैं और अनुष्ठानों के माध्यम से उनके बीच व्यवस्था बनाए रखते हैं, तो उनमें आत्म-सम्मान होगा, और वे अपनी मर्जी से आपके पास आएंगे।" (एनालेक्ट्स 2.3)।

ज. स्वर्ग का जनादेश (天命 - तियानमिंग)

- परिभाषा और व्याख्या: जबकि यह पूरी तरह से कन्फ्यूशियसियन अवधारणा नहीं है, कन्फ्यूशियस ने इस विचार का समर्थन किया कि स्वर्ग (एक ब्रह्मांडीय नैतिक शक्ति) एक शासक को उसके पुण्य के आधार पर शासन करने का अधिकार देता है। यदि कोई शासक भ्रष्ट या अन्यायपूर्ण हो जाता है, तो वह स्वर्ग के जनादेश को खो देता है, और इसे एक नए, पुण्यात्मा शासक को हस्तांतरित किया जा सकता है।
- राजनीतिक प्रासंगिकता: इस अवधारणा ने वंशवादी परिवर्तन के लिए एक नैतिक औचित्य प्रदान किया और लोगों के कल्याण के लिए नैतिक रूप से शासन करने की शासक की जिम्मेदारी पर जोर दिया।

झ. पितृ भक्ति (孝 - शियाओ)

- परिभाषा और व्याख्या: शियाओ अपने माता-पिता और बुजुर्ग परिवार के सदस्यों के प्रति सम्मान, आज्ञाकारिता और देखभाल का गुण है। इसे अन्य सभी गुणों की जड़ के रूप में देखा जाता है।
- राजनीतिक प्रासंगिकता: कन्फ्यूशियस का मानना था कि यदि व्यक्ति अपने परिवारों के भीतर पितृ भक्ति का विकास करते हैं, तो वे स्वाभाविक रूप से उस सम्मान और वफादारी को अपने शासकों और राज्य तक बढ़ाएंगे। एक सुव्यवस्थित परिवार एक सुव्यवस्थित राज्य की नींव है।

4. पुस्तकें और निबंध

कन्फ्यूशियस ने स्वयं आधुनिक अर्थों में पुस्तकें नहीं लिखीं। उनकी शिक्षाएँ मुख्य रूप से मौखिक थीं, जो उनके शिष्यों को बातचीत, प्रश्नों के उत्तर और नैतिक उदाहरणों के माध्यम से दी जाती थीं। उनके विचारों और कथनों को बाद में उनके शिष्यों द्वारा संकलित किया गया, विशेष रूप से इसमें:

- द एनालेक्ट्स *(論語 - लुन्यू)* (लगभग 475-221 ईसा पूर्व संकलित): यह कन्फ्यूशियस के दर्शन का सबसे आधिकारिक और विश्वसनीय स्रोत है। यह सूक्तियों, उपाख्यानों और कन्फ्यूशियस और उनके शिष्यों के बीच की बातचीत का एक संग्रह है, जिसमें नैतिकता, शासन, शिक्षा और सामाजिक आचरण सहित विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। यह कन्फ्यूशियसवाद को समझने के लिए प्राथमिक पाठ है।

कन्फ्यूशियस को पारंपरिक रूप से पांच क्लासिक्स (五經 - वुजिंग) से भी जोड़ा जाता है, हालांकि उन्होंने उन्हें नहीं लिखा था। माना जाता है कि उन्होंने इन प्राचीन ग्रंथों को संपादित, संकलित या प्रसारित किया था, जो कन्फ्यूशियसियन कैनन के लिए मौलिक बन गए:

- कविता का क्लासिक *(詩經 - शी जिंग):* प्राचीन कविताओं और गीतों का एक संग्रह।
- दस्तावेजों की पुस्तक *(書經 - शू जिंग):* प्राचीन चीन से ऐतिहासिक दस्तावेजों और भाषणों का एक संग्रह।
- अनुष्ठानों की पुस्तक *(禮記 - ली जी):* प्राचीन अनुष्ठानिक प्रथाओं और सामाजिक शिष्टाचार का वर्णन करता है।
- परिवर्तन की पुस्तक *(易經 - यी जिंग):* दार्शनिक टिप्पणियों के साथ एक अटकल पाठ।
- वसंत और शरद ऋतु के इतिहास *(春秋 - चुन किउ):* लू राज्य का 772 ईसा पूर्व से 481 ईसा पूर्व तक का एक ऐतिहासिक क्रॉनिकल, जिसे पारंपरिक रूप से कन्फ्यूशियस के संपादन का श्रेय दिया जाता है।

5. उल्लेखनीय उद्धरण (व्याख्या के साथ)

- "क्या निरंतर दृढ़ता और लगन के साथ सीखना सुखद नहीं है? क्या दूर-दूर से मित्रों का आना delightful नहीं है? क्या वह पूर्ण पुण्य का व्यक्ति नहीं है, जिसे कोई बेचैनी महसूस नहीं होती, भले ही लोग उसे नोटिस न करें?" (एनालेक्ट्स 1.1)
  - व्याख्या: यह शुरुआती अंश सीखने के आनंद, साहचर्य के सुख, और एक नैतिक रूप से ईमानदार व्यक्ति के आदर्श पर प्रकाश डालता है जो बाहरी पहचान की परवाह किए बिना स्वयं के प्रति सच्चा रहता है। यह आंतरिक पुण्य पर केंद्रित दर्शन के लिए स्वर निर्धारित करता है।
- "जो आप अपने साथ नहीं चाहते, वह दूसरों के साथ न करें।" (एनालेक्ट्स 15.23)
  - व्याख्या: यह कन्फ्यूशियस का "गोल्डन रूल" है, जो पारस्परिकता और सहानुभूति को मुख्य नैतिक सिद्धांतों के रूप में जोर देता है। यह व्यक्तियों से दूसरों पर अपने कार्यों के प्रभाव पर विचार करने और परोपकार के साथ कार्य करने का आह्वान करता है।

- "यदि आप लोगों को नियमों के माध्यम से नियंत्रित करते हैं और दंड के माध्यम से उनके बीच व्यवस्था बनाए रखते हैं, तो वे आपसे भाग जाएंगे, और सभी आत्म-सम्मान खो देंगे। यदि आप उन्हें पुण्य के माध्यम से नियंत्रित करते हैं और अनुष्ठानों के माध्यम से उनके बीच व्यवस्था बनाए रखते हैं, तो उनमें आत्म-सम्मान होगा, और वे अपनी मर्जी से आपके पास आएंगे।" (एनालेक्ट्स 2.3)
    - व्याख्या: यह उनके राजनीतिक दर्शन की आधारशिला है। कन्फ्यूशियस का तर्क है कि बल और भय (कानून और दंड) द्वारा शासन लंबे समय में अप्रभावी होता है, जिससे सतही आज्ञाकारिता और नैतिक अखंडता का नुकसान होता है। इसके बजाय, नैतिक उदाहरण (दे) और उचित सामाजिक आचरण (ली) द्वारा शासन लोगों के बीच वास्तविक सम्मान, आत्म-अनुशासन और स्वेच्छा से भागीदारी को बढ़ावा देता है।
- "एक सज्जन अपने नाम के अनुसार कार्य करता है, और खुद को अपने पद से श्रेष्ठ नहीं मानता।" (एनालेक्ट्स 13.3)
    - व्याख्या: "नामों का सुधार" की अवधारणा को दर्शाता है। यह अपनी निर्धारित भूमिका और जिम्मेदारियों को ईमानदारी और विनम्रता के साथ पूरा करने के महत्व पर जोर देता है, यह सुनिश्चित करता है कि कार्य शीर्षकों और कर्तव्यों के अनुरूप हों।

6. आंदोलन या क्रांतियाँ

कन्फ्यूशियस बलपूर्वक मौजूदा शक्ति संरचनाओं को उखाड़ फेंकने की वकालत करने के अर्थ में एक क्रांतिकारी नहीं थे। इसके बजाय, उन्होंने नैतिक अनुनय और शिक्षा के माध्यम से सुधार और बहाली की मांग की।

- विचारों के सौ स्कूल: कन्फ्यूशियस "विचारों के सौ स्कूल" युग के दौरान एक केंद्रीय व्यक्ति थे, एक बौद्धिक उत्कर्ष का काल जहाँ विभिन्न दार्शनिक स्कूल (कन्फ्यूशियसवाद, दाओवाद, विधिवाद, मोहिज़्म, आदि) प्रभाव के लिए प्रतिस्पर्धा करते थे। उन्होंने शासकों को परोपकारी और गुणी शासन के अपने सिद्धांतों को अपनाने के लिए राजी करने की मांग की।
- घूमने वाला राजनेता (周遊列國 - झोउयू लिगुओ): कई वर्षों तक (लगभग 497-484 ईसा पूर्व), अपने गृह राज्य लू में अपने विचारों को सफलतापूर्वक लागू करने में विफल रहने के बाद, कन्फ्यूशियस विभिन्न सामंती राज्यों (जैसे, वेई, सोंग, चेन, काई) में यात्रा की, रोजगार की तलाश में और विभिन्न सामंती सरदारों को सलाह दी। उनका लक्ष्य एक ऐसा शासक खोजना था जो उनकी शिक्षाओं को अपनाएगा और वास्तव में एक न्यायपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण सरकार स्थापित करेगा। उन्हें प्रभाव का एक स्थायी पद प्राप्त करने में काफी हद तक असफलता मिली, अक्सर उनके नैतिक दृष्टिकोण के प्रति प्रतिरोध या उदासीनता का सामना करना पड़ा।

उनका "आंदोलन" मुख्य रूप से बौद्धिक और शैक्षिक था - शिष्यों को उनके आदर्शों को मूर्त रूप देने के लिए प्रशिक्षित करना और उन्हें सार्वजनिक सेवा के लिए तैयार करना, यह उम्मीद करते हुए कि वे एक दिन समाज को भीतर से बदलने का नेतृत्व करेंगे।

7. प्रमुख उपलब्धियां और राजनीतिक विज्ञान या सिद्धांत में योगदान

- कन्फ्यूशियसवाद की स्थापना: एक सुसंगत और व्यापक दार्शनिक प्रणाली विकसित की जिसने चीनी सभ्यता को गहराई से आकार दिया।
- सभी के लिए शिक्षा पर जोर: कन्फ्यूशियस सामाजिक वर्ग की परवाह किए बिना शिक्षा की वकालत करने में अग्रणी थे। उन्होंने एक निजी स्कूल की स्थापना की और विभिन्न पृष्ठभूमि से छात्रों को स्वीकार किया, जिससे सीखने पर अभिजात्य एकाधिकार टूट गया। इसने ज्ञान का लोकतंत्रीकरण किया और सार्वजनिक सेवा के लिए एक योग्यता-आधारित आदर्श बनाया।
- शासन के लिए एक नैतिक ढांचे का विकास: नैतिक नेतृत्व (रेन, ली, यी, दे) के लिए स्पष्ट सिद्धांतों को व्यक्त किया और राजनीतिक अधिकार के लिए एक नैतिक आधार स्थापित किया, जो बल द्वारा शासन के विपरीत था।
- योग्यता-आधारित शासन की वकालत: जन्म या धन के बजाय पद के लिए योग्यता के रूप में पुण्य और ज्ञान पर जोर देकर, उन्होंने चीन की शाही परीक्षा प्रणाली के बाद के विकास के लिए आधार तैयार किया, जिसने कन्फ्यूशियसियन क्लासिक्स के ज्ञान के आधार पर अधिकारियों का चयन करने की मांग की।

- जुनज़ी (अनुकरणीय व्यक्ति) की अवधारणा: व्यक्तियों के लिए एक स्पष्ट नैतिक आदर्श प्रदान किया जिसकी वे आकांक्षा कर सकें, प्रभावी नेतृत्व के लिए आत्म-सुधार और नैतिक अखंडता को पूर्व-आवश्यकता के रूप में जोर दिया।
- अनुष्ठानों के माध्यम से सामाजिक सद्भाव: सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने, भूमिकाओं को परिभाषित करने और सम्मानजनक बातचीत को बढ़ावा देने में ली (औचित्य और अनुष्ठान) की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला, जिससे संघर्ष कम हुआ।
- दार्शनिक मानवतावाद: नैतिकता और शासन के मूल के रूप में अलौकिक देवताओं से मानवीय आचरण और संबंधों पर ध्यान केंद्रित किया, जीवन के लिए एक तर्कसंगत और नैतिक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया।

8. विवाद या आलोचनाएँ जिनका उन्हें सामना करना पड़ा

कन्फ्यूशियस के विचारों को उनके जीवनकाल के दौरान और पूरे इतिहास में विरोध का सामना करना पड़ा:

- उनके जीवनकाल के दौरान:
  - राजनीतिक अस्वीकृति: कई शासकों ने नैतिक शासन और अनुष्ठान पर उनके जोर को बहुत आदर्शवादी या प्रतिबंधात्मक पाया, जो व्यावहारिक, शक्ति-उन्मुख रणनीतियों को पसंद करते थे। उन्हें अपने विचारों को लागू करने के लिए शायद ही कभी एक उच्च या स्थायी राजनीतिक पद मिला।
  - अन्य स्कूलों से विरोध:
    - विधिवादी (法家 - फ़ाजिया): विचारों का एक प्रतिद्वंद्वी स्कूल जो बाद में उभरा (हालांकि इसके विचार कन्फ्यूशियस के समय के दौरान मौजूद थे)। विधिवादियों ने कन्फ्यूशियसवाद का कड़ा विरोध किया, यह तर्क देते हुए कि मानव स्वभाव स्वाभाविक रूप से स्वार्थी था और प्रभावी शासन के लिए सख्त कानूनों, कठोर दंडों और पूर्ण राज्य शक्ति की आवश्यकता थी, न कि नैतिक अनुनय की। शांग यांग और हान फ़ेई प्रमुख विधिवादी विचारक थे।
    - मोहिस्ट (墨家 - मो जिया): मोज़ी के नेतृत्व में, उन्होंने "सार्वभौमिक प्रेम" (जियान'आई) की वकालत की, जो कन्फ्यूशियसवाद के पदानुक्रमित और विभेदित प्रेम (उदाहरण के लिए, परिवार के लिए अधिक प्रेम) से भिन्न था। मोहिस्टों ने कन्फ्यूशियस के विस्तृत अनुष्ठानों और भाग्य पर जोर की भी आलोचना की।
    - दाओवादी (道家 - दाओजिया): लाओज़ी और ज़ुआंगज़ी जैसे दाओवादी दार्शनिकों ने न्यूनतम सरकारी हस्तक्षेप और जीवन के एक सरल, अधिक प्राकृतिक तरीके पर लौटने की वकालत की, जो सामाजिक व्यवस्था और मानव निर्मित संस्थानों पर कन्फ्यूशियसवाद के जोर के सीधे विपरीत था।
- बाद की आलोचनाएँ:
  - पुस्तकों का जलना और विद्वानों को दफनाना (213 ईसा पूर्व): किन राजवंश (221-206 ईसा पूर्व) के दौरान, पहले सम्राट किन शि हुआंग, विधिवादी विचारों से प्रभावित होकर, कई कन्फ्यूशियस ग्रंथों को जलाने और कन्फ्यूशियसियन विद्वानों को सताने का आदेश दिया, उनके शिक्षण को अपने सत्तावादी शासन के लिए विध्वंसक मानते हुए।
  - मई चौथा आंदोलन (20वीं सदी की शुरुआत, 1919 के बाद): आधुनिक चीन में, विशेष रूप से मई चौथा आंदोलन के दौरान, कन्फ्यूशियसवाद की बुद्धिजीवियों द्वारा भारी आलोचना की गई, जिन्होंने इसे चीन के कथित पिछड़ेपन, कठोरता और आधुनिक चुनौतियों के अनुकूल होने में अक्षमता के लिए जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने इसे सत्तावाद को बढ़ावा देने, व्यक्तिवाद को दबाने और वैज्ञानिक प्रगति में बाधा डालने के लिए दोषी ठहराया। उन्होंने पश्चिमी विज्ञान और लोकतंत्र को अपनाने के लिए पारंपरिक कन्फ्यूशियसियन मूल्यों से पूरी तरह से अलग होने का आह्वान किया।
  - सांस्कृतिक क्रांति (1966-1976): सांस्कृतिक क्रांति के दौरान, कन्फ्यूशियसवाद को कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा "चार पुराने" (पुराने विचार, पुरानी संस्कृति, पुराने रीति-रिवाज, पुरानी आदतें) में से एक के रूप में फिर से जोरदार हमला किया गया, जिससे कन्फ्यूशियसियन मंदिरों और ग्रंथों का विनाश हुआ, और स्वयं कन्फ्यूशियस का अपमान हुआ।

9. प्रमुख जीवन घटनाओं और राजनीतिक योगदानों की समयरेखा (वर्षवार)

- 551 ईसा पूर्व: क़ुफ़ू, लू राज्य में जन्म।
- लगभग 548 ईसा पूर्व: पिता की मृत्यु, कन्फ्यूशियस को गरीबी में पाला गया।
- लगभग 532 ईसा पूर्व: विवाह किया और एक पुत्र, कोन्ग ली हुआ।
- लगभग 522 ईसा पूर्व: एक शिक्षक के रूप में अपना करियर शुरू किया, सामाजिक वर्ग की परवाह किए बिना छात्रों को स्वीकार किया।
- लगभग 501 ईसा पूर्व: लू में झोंगदू (中都宰) के मजिस्ट्रेट के रूप में नियुक्त किया गया, एक प्रारंभिक आधिकारिक पद।
- लगभग 500 ईसा पूर्व: लू में अपराध मंत्री (大司寇) के रूप में पदोन्नत; कुछ स्रोतों से पता चलता है कि उन्होंने संक्षेप में कार्यवाहक प्रधान मंत्री के रूप में भी कार्य किया। इस अवधि के दौरान, लू के मामलों में कथित तौर पर समृद्धि आई।
- 497 ईसा पूर्व: लू में अपने पद से इस्तीफा दिया, संभवतः लू के ड्यूक के तुच्छ आचरण से मोहभंग या एक प्रतिद्वंद्वी मंत्री के साथ संघर्ष के कारण।
- 497-484 ईसा पूर्व: लगभग 14 वर्षों तक "घूमने वाले राजनेता" के रूप में अपनी लंबी यात्रा शुरू की, विभिन्न सामंती राज्यों (वेई, सोंग, चेन, काई, आदि) में यात्रा की, शासकों को सलाह देने और अपने राजनीतिक विचारों को लागू करने की मांग की। उन्हें अक्सर अस्वीकृति या उदासीनता का सामना करना पड़ा।
- 484 ईसा पूर्व: अपनी राजनीतिक विफलताओं से निराश होकर लू लौट आए। उन्होंने अपने शेष वर्षों को शिक्षण, प्राचीन ग्रंथों (जैसे कविता का क्लासिक और दस्तावेजों की पुस्तक) को संपादित करने और झोउ अनुष्ठानों को प्रसारित करने के लिए समर्पित किया।
- 481 ईसा पूर्व: वसंत और शरद ऋतु के इतिहास को संकलित या संपादित किया।
- 479 ईसा पूर्व: क़ुफ़ू, लू में मृत्यु।

10. उनके व्यक्तित्व या कार्य के कम ज्ञात तथ्य या अद्वितीय पहलू

- विनम्र शुरुआत: अपनी बाद की पूजा के बावजूद, कन्फ्यूशियस एक बहुत गरीब परिवार से आए थे और उन्हें कम उम्र से ही काम करना पड़ा था, जिसने शायद उन्हें आम लोगों पर एक अनूठा दृष्टिकोण दिया।
- संगीत के प्रति प्रेम: उन्हें संगीत की गहरी सराहना थी और उनका मानना था कि यह नैतिक विकास और सामाजिक सद्भाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होंने संगीत को छह कलाओं में से एक के रूप में सिखाया।
- हास्य की भावना: हालाँकि अक्सर कठोर के रूप में चित्रित किया जाता है, द एनालेक्ट्स कभी-कभी शिष्यों के साथ उनकी बातचीत में कन्फ्यूशियस की बुद्धि और कोमल हास्य की झलकियाँ दिखाता है।
- राजनीति में निराशा: अपने राजनीतिक विचारों को व्यवहार में लाने की अपनी आजीवन महत्वाकांक्षा के बावजूद, वे प्रभाव का एक स्थायी पद सुरक्षित करने में काफी हद तक विफल रहे, एक बुद्धिमान शासक की कमी के बारे में निराशा की भावना के साथ मर गए।
- पहले निजी शिक्षक: एक निजी स्कूल की उनकी स्थापना, सभी के लिए खुली, उनके समय के लिए क्रांतिकारी थी, क्योंकि शिक्षा पहले केवल अभिजात वर्ग तक सीमित थी। इस कार्य ने निजी शिक्षा और योग्यता-आधारित शासन के विचार की नींव रखी।
- अपनी माँ के प्रति पितृ भक्ति: कन्फ्यूशियस अपनी माँ के प्रति गहराई से समर्पित थे। उनकी मृत्यु के बाद, उन्होंने तीन साल तक उनका शोक मनाया, एक पारंपरिक शोक अवधि जिसका उन्होंने सख्ती से पालन किया, जिससे पितृ भक्ति पर उनके अपने जोर को बल मिला।

पोलिबियस: रोम के उदय का व्यावहारिक इतिहासकार

पोलिबियस (Πολύβιος, पॉल्यूबियस) हेलेनिस्टिक काल के एक यूनानी इतिहासकार थे, जो अपने कार्य द हिस्टरीज (इतिहास) के लिए प्रसिद्ध थे, जिसने भूमध्यसागरीय दुनिया में प्रमुख शक्ति के रूप में रोमन गणराज्य के उदय को सावधानीपूर्वक प्रलेखित किया। एकेन लीग में एक प्रमुख परिवार में जन्मे, उनका राजनीतिक करियर तब छोटा हो गया जब उन्हें रोम में बंधक बना लिया गया। हालांकि, यह अवधि महत्वपूर्ण साबित हुई, जिससे उन्हें रोमन राजनीतिक हलकों तक अभूतपूर्व पहुंच मिली और उन्हें उनकी गणतांत्रिक प्रणाली के आंतरिक कामकाज को प्रत्यक्ष रूप से देखने का अवसर मिला। इतिहास के प्रति उनके विश्लेषणात्मक और व्यावहारिक दृष्टिकोण, विशेष रूप से मिश्रित संविधान और सरकारों की चक्रीय प्रकृति (एनासाइक्लोसिस) पर उनके सिद्धांतों ने बाद के राजनीतिक विचार को गहराई से प्रभावित किया।

1. जन्म और मृत्यु की तिथि

- जन्म: लगभग 200 ईसा पूर्व, मेगालोपोलिस (Μεγαλόπολις), आर्कडिया, ग्रीस (एकेन लीग का हिस्सा) में।
- मृत्यु: लगभग 118 ईसा पूर्व, ग्रीस में (संभवतः मेगालोपोलिस)।

2. दार्शनिक, राजनीतिक, या वैचारिक प्रभाव

पोलिबियस के विचार यूनानी बौद्धिक परंपराओं और रोमन शक्ति के साथ उनके प्रत्यक्ष अनुभव के संयोजन से आकार लेते हैं।

- थ्यूसीडाइड्स (लगभग 460-400 ईसा पूर्व): पेलोपोनेसियन युद्ध के शास्त्रीय यूनानी इतिहासकार पोलिबियस के प्राथमिक ऐतिहासिक मॉडल थे। पोलिबियस ने थ्यूसीडाइड्स की तथ्यात्मक सटीकता, स्रोतों की आलोचनात्मक जांच, राजनीतिक और सैन्य घटनाओं पर ध्यान केंद्रित करने, और इतिहास से अंतर्निहित कारणों और पाठों की खोज की प्रतिबद्धता का अनुकरण किया। उन्होंने स्पष्ट रूप से "व्यावहारिक इतिहास" लिखने का लक्ष्य रखा, जिसमें व्यावहारिक उपयोगिता प्रदान की गई।
- यूनानी राजनीतिक दर्शन (प्लेटो, अरस्तू): वे राजनीतिक विचार की यूनानी परंपरा से परिचित थे, विशेष रूप से प्लेटो और अरस्तू द्वारा संविधानों के वर्गीकरण से। उन्होंने सरकारों की चक्रीय प्रकृति और मिश्रित संविधान के गुणों के बारे में अपने विचारों पर निर्माण किया, लेकिन उन्हें रोम के अपने अनुभवजन्य अवलोकनों के अनुकूल बनाया।
- स्टोइकिज्म (अप्रत्यक्ष रूप से): जबकि एक स्टोइक दार्शनिक नहीं थे, तर्क, पुण्य (विशेष रूप से नेतृत्व में), कर्तव्य और घटनाओं को नियंत्रित करने वाली एक सार्वभौमिक लोगोस (तर्क) की अवधारणा पर उनके जोर में स्टोइक सिद्धांतों के साथ प्रतिध्वनि है, जो उनके समय के दौरान रोम में पकड़ बना रहे थे। स्किपिओनिक सर्कल के साथ उनका घनिष्ठ संबंध, जिसमें स्टोइक-झुकाव वाले बुद्धिजीवी शामिल थे, ने इसमें योगदान दिया होगा।
- रोमन गणराज्यवाद: रोमन संस्थानों और उनकी स्पष्ट स्थिरता के प्रति उनकी प्रशंसा, अस्थिर यूनानी शहर-राज्यों के विपरीत, एक गहरा प्रभाव था। उन्होंने रोम को मिश्रित संविधान सिद्धांत का सफल प्रतीक माना।
- उनका अपना राजनीतिक अनुभव: एकेन लीग के आंतरिक और बाहरी मामलों में उनकी प्रत्यक्ष भागीदारी ने उन्हें राजनीतिक शक्ति, कूटनीति और सैन्य वास्तविकताओं की एक व्यावहारिक, न कि पूरी तरह से सैद्धांतिक, समझ दी।

3. प्रमुख राजनीतिक विचार, सिद्धांत या अवधारणाएँ

पोलिबियस के राजनीतिक सिद्धांत उनके ऐतिहासिक आख्यान में सन्निहित हैं, जिसका उद्देश्य रोम के सत्ता में आश्चर्यजनक उदय की व्याख्या करना है।

क. एनासाइक्लोसिस (संविधानों का चक्रीय सिद्धांत)

- परिभाषा और व्याख्या: पोलिबियस ने संवैधानिक परिवर्तन का एक सिद्धांत प्रस्तावित किया, जिसमें तर्क दिया गया कि सरकार के सभी रूप स्वाभाविक रूप से अस्थिर होते हैं और अपने भ्रष्ट समकक्षों में पतित हो जाते हैं, अंततः विभिन्न रूपों के माध्यम से घूमते रहते हैं।

    - राजशाही (सभी के लिए एक का शासन) → अत्याचार (स्वयं के लिए एक का शासन)
    - अभिजात वर्ग (सभी के लिए कुछ बेहतरीन का शासन) → कुलीनतंत्र (स्वयं के लिए कुछ धनी का शासन)
    - लोकतंत्र (सभी के लिए कई का शासन) → ऑक्लोक्रसी (स्वयं के लिए कई का भीड़ शासन)
    - ऑक्लोक्रसी के बाद, चक्र अक्सर राजशाही में वापस आ जाता है क्योंकि व्यवस्था बहाल करने के लिए एक मजबूत नेता उभरता है।
- राजनीतिक प्रासंगिकता: इस सिद्धांत ने सरकार के "शुद्ध" रूपों की अंतर्निहित अस्थिरता को समझने के लिए एक ढांचा प्रदान किया और इस चक्र को तोड़ने के लिए एक तंत्र की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

ख. मिश्रित संविधान (कॉन्स्टीट्यूटियो मिक्सटा)

- परिभाषा और व्याख्या: पोलिबियस ने तर्क दिया कि रोमन गणराज्य का संविधान उसकी असाधारण स्थिरता और सफलता की कुंजी था क्योंकि इसने सरकार के सभी तीन "अच्छे" शुद्ध रूपों के तत्वों को प्रभावी ढंग से जोड़ा था, जिससे एनासाइक्लोसिस के नुकसान से बचा जा सके।
    - राजशाही तत्व: कॉन्सल्स द्वारा प्रतिनिधित्व (दो वार्षिक रूप से निर्वाचित मुख्य मजिस्ट्रेट जिनके पास कार्यकारी और सैन्य शक्ति होती है)।
    - कुलीनतंत्रीय तत्व: सीनेट द्वारा प्रतिनिधित्व (अनुभवी पूर्व-मजिस्ट्रेटों का एक निकाय जो सलाह, विधायी पहल और प्रशासनिक पर्यवेक्षण प्रदान करता है)।
    - लोकतांत्रिक तत्व: लोकप्रिय सभाओं द्वारा प्रतिनिधित्व (जहाँ नागरिक कानूनों पर मतदान करते थे, मजिस्ट्रेटों का चुनाव करते थे और अंतिम अपील अदालतों के रूप में कार्य करते थे)।
- राजनीतिक प्रासंगिकता: मिश्रित संविधान ने जाँच और संतुलन की एक प्रणाली बनाई, जहाँ सरकार का प्रत्येक हिस्सा दूसरों को नियंत्रित कर सकता था। यह आपसी निर्भरता किसी भी एक तत्व को अत्यधिक शक्तिशाली बनने से रोकती थी, इस प्रकार दीर्घकालिक स्थिरता और प्रभावी शासन सुनिश्चित करती थी। यह राजनीतिक सिद्धांत में पोलिबियस का सबसे गहरा योगदान था।

ग. व्यावहारिक इतिहास और कारणता

- परिभाषा और व्याख्या: पोलिबियस ने जोर देकर कहा कि इतिहास "व्यावहारिक" (प्रैगमाटिक हिस्टोरिया) होना चाहिए, जिसका अर्थ है कि इसे सत्यापित तथ्यों, राजनीतिक और सैन्य घटनाओं, और कार्यों के अंतर्निहित कारणों और परिणामों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। उन्होंने पौराणिक या अलंकारिक अलंकरणों को अस्वीकार कर दिया।
- राजनीतिक प्रासंगिकता: इतिहास का उद्देश्य राजनेताओं और नागरिकों के लिए व्यावहारिक सबक प्रदान करना है, जिससे उन्हें प्रभावी ढंग से शासन करना और पिछली गलतियों से बचना समझने में मदद मिल सके। उन्होंने रोम की सफलता के तर्कसंगत और अनुभवजन्य कारणों की पहचान करने की मांग की।

घ. नैतिक चरित्र का महत्व

- परिभाषा और व्याख्या: संस्थाओं पर जोर देते हुए, पोलिबियस ने नेताओं और नागरिकों के नैतिक चरित्र के महत्व को भी पहचाना। उनका मानना था कि रोमन चरित्र, सार्वजनिक कर्तव्य, अनुशासन और शपथ के प्रति श्रद्धा पर अपने जोर के साथ, उनकी सफलता में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- राजनीतिक प्रासंगिकता: नैतिक पतन सबसे अच्छी संस्थाओं को भी कमजोर कर सकता है, जिससे भ्रष्टाचार और एक राज्य का अंततः पतन हो सकता है, भले ही उसमें मिश्रित संविधान हो।

ङ. साम्राज्य की आवश्यकता (रोमन प्रोविडेंस)

- परिभाषा और व्याख्या: पोलिबियस ने रोम के उदय को एक दैवीय रूप से निर्धारित या भाग्यवादी प्रक्रिया के रूप में देखा। उनका मानना था कि रोम की सफलता केवल आकस्मिक नहीं थी, बल्कि उसके श्रेष्ठ संस्थानों, चरित्र और उसके भाग्य का मार्गदर्शन करने वाली "भाग्य की शक्ति" या "प्रोविडेंस" (Τύχη, तुके) का परिणाम थी।
- राजनीतिक प्रासंगिकता: इस दृष्टिकोण ने रोम के प्रभुत्व को तर्कसंगत बनाया और परोक्ष रूप से भूमध्यसागरीय दुनिया पर शासन करने की उसकी उपयुक्तता का सुझाव दिया।

4. प्रमुख पुस्तकें और निबंध

पोलिबियस का सबसे महत्वपूर्ण और वस्तुतः एकमात्र जीवित कार्य है:

- द हिस्टरीज (Ἱστορίαι, हिस्टोरियाई, लगभग 160-118 ईसा पूर्व लिखी गई): मूल रूप से 220 ईसा पूर्व से 146 ईसा पूर्व तक की अवधि को कवर करने के लिए अभिप्रेत था, जिसमें दूसरे और तीसरे प्यूनिक युद्धों और उसके बाद के विश्व शक्ति के रूप में रोम के उदय का दस्तावेजीकरण किया गया था। इसमें चालीस पुस्तकें शामिल थीं, लेकिन केवल पहली पांच पुस्तकें ही पूरी तरह से बची हैं, साथ ही दूसरों से पर्याप्त अंश और उद्धरण भी हैं।
  - सारांश: कार्य उनके उद्देश्य की व्याख्या करके शुरू होता है: यह समझना कि रोम, केवल 53 वर्षों में (220-168 ईसा पूर्व से), लगभग पूरी बसी हुई दुनिया को कैसे जीतने में सक्षम था। वह राजनीतिक, सैन्य और राजनयिक घटनाओं का सावधानीपूर्वक विवरण देता है, जिसमें प्यूनिक युद्धों और मैसेडोनियाई युद्धों पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
  - मुख्य विशेषताएँ: यह अपने विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण, कारणता पर जोर, सैन्य अभियानों का विस्तृत विवरण, संविधानों का तुलनात्मक विश्लेषण (विशेष रूप से रोम का), और राजनेताओं की भविष्य की पीढ़ियों के लिए सबक प्रदान करने के अपने व्यावहारिक इरादे के लिए प्रसिद्ध है। इसमें व्यापक नृवंशविज्ञान, भौगोलिक और राजनीतिक विसंगतियाँ शामिल हैं।

5. उल्लेखनीय उद्धरण (व्याख्या के साथ)

- "अतीत का ज्ञान भविष्य के लिए सबसे अच्छा निर्देश है।" (द हिस्टरीज, I.1)
  - व्याख्या: यह शुरुआती कथन इतिहास की व्यावहारिक उपयोगिता में पोलिबियस के मूल विश्वास पर प्रकाश डालता है। उन्होंने इतिहास को केवल कहानी कहने के रूप में नहीं बल्कि राजनीतिक और सैन्य चुनौतियों को नेविगेट करने के लिए पाठों के एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में देखा, जिससे राजनेताओं को सूचित निर्णय लेने और नागरिकों को अपनी दुनिया को समझने में मदद मिल सके।
- "सभी मौजूदा संविधान, या सरकार के रूप, विकास और क्षय के चक्रों के अधीन हैं।" (द हिस्टरीज, VI.9)
  - व्याख्या: यह एनासाइक्लोसिस के उनके सिद्धांत को प्रस्तुत करता है। इसका अर्थ है कि सरकार का प्रत्येक शुद्ध रूप (राजशाही, अभिजात वर्ग, लोकतंत्र) स्वाभाविक रूप से अपने स्वयं के भ्रष्टाचार और एक भ्रष्ट रूप में परिवर्तन के बीज रखता है, जिससे परिवर्तन का एक अपरिहार्य चक्र होता है।
- "रोमनों ने आधे सदी से भी कम समय में सार्वभौमिक प्रभुत्व प्राप्त कर लिया। इससे पहले किसी ने ऐसा नहीं किया था।" (द हिस्टरीज, I.1)
  - व्याख्या: यह उनके कार्य के महत्वाकांक्षी दायरे को निर्धारित करता है। पोलिबियस रोम के तीव्र उदय से वास्तव में चकित थे और उन्होंने अपनी उत्कृष्ट कृति को उन अद्वितीय कारकों - संस्थागत, सैन्य और नैतिक - को समझने के लिए समर्पित किया जिसने उन्हें इस तरह की अभूतपूर्व सफलता प्राप्त करने की अनुमति दी।
- "रोमन संविधान की विशिष्ट उत्कृष्टता यह थी कि यह एक मिश्रित संविधान था।" (द हिस्टरीज, VI.10)
  - व्याख्या: यह रोम की स्थिरता के संबंध में उनका केंद्रीय शोध है। उनका मानना था कि राजशाही (कॉन्सल्स), अभिजात वर्ग (सीनेट), और लोकतंत्र (सभाओं) की ताकतों को मिलाकर, रोम ने शुद्ध रूपों की अंतर्निहित अस्थिरता से बचा और जाँच और संतुलन की एक आत्म-सुधार प्रणाली बनाई।

6. आंदोलन या क्रांतियाँ

पोलिबियस एक क्रांतिकारी नहीं थे बल्कि एकेन लीग के राजनीतिक और सैन्य मामलों में एक सक्रिय भागीदार थे, जो रोम द्वारा तेजी से हावी होती दुनिया में अपनी स्वतंत्रता और प्रभाव बनाए रखने के लिए संघर्ष कर रहे थे।

- एकेन लीग के राजनेता: कम उम्र से ही, वे लीग के राजनीतिक जीवन में शामिल थे, एक राजदूत और घुड़सवार सेना कमांडर के रूप में सेवा कर रहे थे। उनके पिता, लाइकॉर्टस, लीग में एक अग्रणी व्यक्ति थे, जो अक्सर रोम और मैसेडोनिया के बीच एक तटस्थ रुख की वकालत करते थे। पोलिबियस ने अपने पिता के नक्शेकदम पर चलते हुए जटिल राजनयिक परिदृश्य को नेविगेट करने की कोशिश की।

- रोम में बंधक (167-150/149 ईसा पूर्व): यह एक जबरन "आंदोलन" था जिसने उनके जीवन की दिशा को मौलिक रूप से बदल दिया। 1,000 एकेन notables में से एक के रूप में, रोम में उनकी हिरासत संभावित विपक्ष को बेअसर करने की एक रोमन नीति थी। इस अवधि ने उन्हें रोमन समाज और राजनीति का अमूल्य प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करने की अनुमति दी जो उनके बाद के ऐतिहासिक कार्य को सूचित करेगा।
- मध्यस्थ और सलाहकार (146 ईसा पूर्व के बाद): रोम द्वारा कोरिंथ (146 ईसा पूर्व) के विनाश और एकेन लीग के विघटन के बाद रोम से उनकी रिहाई और ग्रीस लौटने के बाद, पोलिबियस ने अचेया के नए रोमन प्रांत को व्यवस्थित करने में रोम की मदद करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अपने ज्ञान और रोम में अपने संपर्कों का उपयोग अपने साथी यूनानियों के लिए अनुकूल शर्तें हासिल करने के लिए किया, संक्रमण को आसान बनाने और रोमन कठोरता को कम करने का प्रयास किया। उनकी भूमिका अनिवार्य रूप से रोम के एक वफादार विषय की थी जिसने जहाँ संभव हो अपने मातृभूमि को लाभ पहुंचाने की कोशिश की।

7. प्रमुख उपलब्धियां और राजनीतिक विज्ञान या सिद्धांत में योगदान

- व्यापक सार्वभौमिक इतिहास: द हिस्टरीज भूमध्यसागरीय दुनिया की सभी प्रमुख शक्तियों को कवर करने वाला एक महत्वाकांक्षी प्रयास था, जो अपने समय के लिए क्रांतिकारी था।
- मिश्रित संविधान का मौलिक सिद्धांत: रोमन गणराज्य का एक सफल मिश्रित संविधान और जाँच और संतुलन की प्रणाली के रूप में उनका विस्तृत विश्लेषण सदियों तक रोम की स्थिरता के लिए निश्चित व्याख्या बन गया और पश्चिमी संवैधानिक विचार को गहराई से प्रभावित किया।
- एनासाइक्लोसिस का सिद्धांत (चक्रीय सरकारें): सरकार के "शुद्ध" रूपों की आंतरिक गतिशीलता और अपरिहार्य पतितता को समझने के लिए एक व्यवस्थित ढांचा प्रदान किया, जिसमें राजनीतिक परिवर्तन और अस्थिरता में अंतर्दृष्टि प्रदान की गई।
- व्यावहारिक इतिहास के अग्रणी: तथ्यात्मक सटीकता, आलोचनात्मक स्रोत मूल्यांकन, और अंतर्निहित कारणों और व्यावहारिक पाठों की तलाश पर उनके जोर ने ऐतिहासिक लेखन के लिए एक मानक स्थापित किया जो बाद के इतिहासकारों के लिए प्रभावशाली था। वे केवल कालक्रम से विश्लेषणात्मक इतिहास की ओर बढ़े।
- राजनीति के लिए अनुभवजन्य दृष्टिकोण: वास्तविक दुनिया के संविधानों (जैसे रोम के) का व्यवस्थित रूप से अध्ययन करके और अवलोकन से सामान्यीकरण करके, उन्होंने राजनीतिक विज्ञान के लिए एक अनुभवजन्य दृष्टिकोण के लिए आधार तैयार किया।
- सैन्य इतिहासकार: सैन्य अभियानों और संगठन (विशेष रूप से रोमन सेनाओं) के उनके विस्तृत और सटीक वृत्तांतों को अत्यधिक सम्मानित किया गया और सामरिक पाठों के लिए उनका अध्ययन किया गया।
- यूनानी और रोमन दुनिया के बीच पुल: एक यूनानी के रूप में जो रोमन संस्थानों को समझते थे और उनकी प्रशंसा करते थे, उन्होंने एक महत्वपूर्ण बौद्धिक पुल के रूप में कार्य किया, यूनानी दुनिया के लिए रोमन शक्ति की व्याख्या की और रोमनों को अपने स्वयं के राज्य का एक परिष्कृत विश्लेषण प्रदान किया।

8. विवाद या आलोचनाएँ जिनका उन्हें सामना करना पड़ा

पोलिबियस के कार्य को, अत्यधिक सम्मानित होने के बावजूद, कुछ आलोचनाओं का सामना करना पड़ा है:

- रोमन-समर्थक पूर्वाग्रह:
  - आलोचना का स्रोत: आधुनिक विद्वान, विशेष रूप से जो प्यूनिक युद्धों या रोम के ग्रीस के साथ व्यवहार के उनके वृत्तांतों का विश्लेषण करते हैं।
  - विवरण: आलोचकों का तर्क है कि पोलिबियस, रोमन अभिजात वर्ग के बीच रहने और स्किपिओ एमीलियनस के मित्र होने के कारण, कभी-कभी एक ऐसा आख्यान प्रस्तुत करते थे जो रोम के लिए अत्यधिक अनुकूल था, जिसमें रोमन क्रूरता या संदिग्ध कार्यों को कम करके आंका गया था, और शायद रोम के दुश्मनों (उदाहरण के लिए, कार्थेज, कुछ मामलों में एकेन लीग) की गलतियों पर अधिक जोर दिया गया था। रोम के भाग्य का मार्गदर्शन करने वाले "प्रोविडेंस" का उनका सिद्धांत भी इस धारणा में योगदान देता है।

    - काउंटर-तर्क: समर्थकों का कहना है कि पोलिबियस अभी भी एक यूनानी देशभक्त थे जिन्होंने ग्रीस की स्वतंत्रता के नुकसान पर शोक व्यक्त किया था। उनका "पूर्वाग्रह" रोमन ताकत की एक यथार्थवादी सराहना और उनकी सफलता को वस्तुनिष्ठ रूप से समझने का एक प्रयास के रूप में देखा जा सकता है, भले ही इसका मतलब यूनानी कमजोरियों के बारे में असहज सच्चाइयों को स्वीकार करना हो। उन्होंने सटीकता का लक्ष्य रखा, और उनके व्यक्तिगत संबंधों ने अमूल्य पहुंच प्रदान की।
- सरल चक्रीय सिद्धांत (एनासाइक्लोसिस):
    - आलोचना का स्रोत: बाद के राजनीतिक सिद्धांतकार (जैसे, मैकियोवेली, जिन्होंने इसे अनुकूलित किया, या आधुनिक विद्वान जो इसे बहुत अधिक नियतात्मक मानते हैं)।
    - विवरण: जबकि प्रभावशाली, एनासाइक्लोसिस सिद्धांत को अत्यधिक नियतात्मक और सरल के रूप में देखा जा सकता है, यह एक अपरिहार्य, कठोर चक्र का सुझाव देता है जो राजनीतिक विकास, क्रांतिकारी परिवर्तनों, या बाहरी कारकों की जटिलताओं के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार नहीं है। यह व्यापक सामाजिक, आर्थिक, या बाहरी ताकतों की कीमत पर आंतरिक संवैधानिक गतिशीलता पर अधिक जोर दे सकता है।
    - काउंटर-तर्क: पोलिबियस ने स्वयं स्वीकार किया कि मिश्रित संविधान चक्र को पूरी तरह से रोक नहीं सकता, हालांकि इसे विलंबित कर सकता है। उनका मुख्य बिंदु शुद्ध रूपों की प्रवृत्तियों और मिश्रण द्वारा प्रदान की गई स्थिरता पर प्रकाश डालना था, न कि इतिहास के एक कठोर, सार्वभौमिक कानून का दावा करना।
- नैतिक स्वर:
    - आलोचना का स्रोत: कुछ आधुनिक इतिहासकार जो विशुद्ध रूप से अलग, मूल्य-तटस्थ दृष्टिकोण पसंद करते हैं।
    - विवरण: पोलिबियस कभी-कभी अपने ऐतिहासिक वृत्तांतों में नैतिक निर्णय शामिल करते हैं, पुण्यात्मा आचरण की प्रशंसा करते हैं और अवगुण की निंदा करते हैं। इसे सख्त वस्तुनिष्ठता से विचलन के रूप में देखा जा सकता है।
    - काउंटर-तर्क: पोलिबियस के लिए, इतिहास का उद्देश्य व्यावहारिक नैतिक और राजनीतिक सबक प्रदान करना था। उनका "नैतिकतावाद" उनके व्यावहारिक दृष्टिकोण का अभिन्न अंग था, क्योंकि उनका मानना था कि चरित्र और पुण्य राजनीतिक सफलता और स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण थे।

9. प्रमुख जीवन घटनाओं और राजनीतिक योगदानों की समयरेखा (वर्षवार)

- 200 ईसा पूर्व: मेगालोपोलिस, आर्कडिया में जन्म।
- लगभग 182 ईसा पूर्व: एक सम्मानित एकेन जनरल फिलोपोमेन के अंतिम संस्कार में अपने पिता का कलश ले जाने के लिए चुने गए, जो उनकी प्रारंभिक प्रमुखता को दर्शाता है।
- 170/169 ईसा पूर्व: एकेन लीग के घुड़सवार सेना कमांडर (हिपार्क) के रूप में कार्य करते हैं।
- 167 ईसा पूर्व: तीसरे मैसेडोनियाई युद्ध के बाद, रोमन द्वारा रोम-विरोधी सहानुभूति के संदेह में 1,000 प्रमुख एकेन बंधकों में से एक के रूप में रोम ले जाया गया।
- 167-150/149 ईसा पूर्व: रोम में एक बंधक के रूप में रहते हैं, स्किपिओ एमीलियनस के एक करीबी दोस्त और ट्यूटर बन जाते हैं, जिससे रोमन अभिजात वर्ग और संस्थानों तक पहुंच प्राप्त होती है। इस समय का उपयोग द हिस्टरीज के लिए व्यापक शोध के लिए करते हैं।
- 150/149 ईसा पूर्व: बंधक स्थिति से मुक्त हुए, काफी हद तक स्किपिओ एमीलियनस के प्रभाव के कारण।
- लगभग 160-118 ईसा पूर्व: द हिस्टरीज पर काम करते हैं।
- 147 ईसा पूर्व: स्किपिओ एमीलियनस के साथ कार्थेज जाते हैं, संभवतः शहर की अंतिम घेराबंदी और विनाश को देखते हैं।
- 146 ईसा पूर्व: रोमनों द्वारा कोरिंथ के विनाश और एकेन लीग के विघटन के समय उपस्थित थे। अचेया के नए प्रांत को व्यवस्थित करने में रोम की मदद करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, यूनानियों के लिए अनुकूल शर्तें हासिल करने के लिए अपने प्रभाव का उपयोग करते हैं।

- 146 ईसा पूर्व के बाद: यात्रा करना जारी रखते हैं, जानकारी एकत्र करते हैं, और द हिस्टरीज को संशोधित करते हैं। वे रोम की विजय की अंतिम घटनाओं का दस्तावेजीकरण करने के लिए खुद को समर्पित करते हैं।
- 118 ईसा पूर्व: ग्रीस में मृत्यु।

10. उनके व्यक्तित्व या कार्य के कम ज्ञात तथ्य या अद्वितीय पहलू

- "सूचित बाहरी व्यक्ति": एक यूनानी बंधक के रूप में उनकी अनूठी स्थिति जिसने एक प्रमुख रोमन परिवार से दोस्ती की, उन्हें रोमन शक्ति का एक अमूल्य "अंदरूनी" दृष्टिकोण दिया जो उस समय के किसी अन्य यूनानी इतिहासकार के पास नहीं था।
- प्रत्यक्षदर्शी वृत्तांतों पर जोर: उन्होंने जानकारी एकत्र करने, प्रतिभागियों का साक्षात्कार करने और युद्ध के मैदानों का दौरा करने के लिए बड़े पैमाने पर यात्रा की, तथ्यात्मक ऐतिहासिक लेखन के लिए प्रत्यक्षदर्शी गवाही और प्रत्यक्ष अवलोकन के महत्व पर जोर दिया।
- ऐतिहासिक अलंकरण की आलोचना: उन्होंने अक्सर अन्य इतिहासकारों की आलोचना की कि वे तथ्यात्मक सटीकता पर नाटकीय प्रभाव या वाक्पटुता को प्राथमिकता देते हैं, जिससे ऐतिहासिक सत्यता के लिए एक उच्च मानक स्थापित होता है।
- खोई हुई उत्कृष्ट कृति: यह एक त्रासदी है कि उनकी स्मारकीय हिस्टरीज का केवल एक अंश ही बचा है, क्योंकि खोई हुई पुस्तकों में रोमन विस्तार की महत्वपूर्ण अवधि और कई अन्य प्राचीन लोगों के विस्तृत वृत्तांत शामिल थे।
- सैन्य में व्यावहारिक अनुभव: घुड़सवार सेना कमांडर के रूप में उनके प्रत्यक्ष अनुभव ने उन्हें सैन्य मामलों की एक व्यावहारिक समझ दी जिसने लड़ाइयों और रणनीति के उनके अत्यधिक विस्तृत और सटीक वृत्तांतों को सूचित किया।
- उनका उद्देश्य: उनका स्पष्ट लक्ष्य यह समझाना था कि रोम ने अपनी अभूतपूर्व प्रभुत्व कैसे प्राप्त किया, न कि केवल घटनाओं का वर्णन करना। अंतर्निहित कारणों और तंत्रों पर यह ध्यान उन्हें प्राचीन इतिहासकारों के बीच अद्वितीय बनाता है।

"पुनर्जागरण और प्रारंभिक आधुनिक काल (1450 ईस्वी से 1750 ईस्वी के बीच जन्मे हुए)"

निकोलस मैकियावेली: आधुनिक राजनीति विज्ञान के जनक

निकोलस डि बर्नार्डो देई मैकियावेली (1469 – 1527 ई.) पुनर्जागरण (Renaissance) काल के एक इतालवी राजनयिक, दार्शनिक, इतिहासकार, लेखक और राजनीतिक सिद्धांतकार थे। उन्हें पारंपरिक राजनीतिक दर्शन से अपने क्रांतिकारी अलगाव के लिए आधुनिक राजनीति विज्ञान के संस्थापक के रूप में व्यापक रूप से माना जाता है। अपने पूर्ववर्तियों के विपरीत, जिन्होंने आदर्श राज्यों और नैतिक रूप से ईमानदार शासकों पर ध्यान केंद्रित किया, मैकियावेली ने राजनीति का विश्लेषण वैसे ही किया जैसा वह वास्तव में थी, अक्सर पारंपरिक नैतिकता की कीमत पर, राज्य के अस्तित्व और स्थिरता के लिए शक्ति के अधिग्रहण, रखरखाव और विस्तार को प्राथमिकता देते हुए। उनका सबसे प्रसिद्ध कार्य, द प्रिंस (The Prince), राजनीतिक विचार में एक विवादास्पद लेकिन मूलभूत पाठ बना हुआ है।

1. प्रारंभिक जीवन और शिक्षा

- जन्म तिथि: 3 मई, 1469 ई.
- जन्म स्थान: फ्लोरेंस, फ्लोरेंस गणराज्य (वर्तमान इटली)
- मृत्यु तिथि: 21 जून, 1527 ई.
- मृत्यु स्थान: फ्लोरेंस, फ्लोरेंस गणराज्य (वर्तमान इटली)

निकोलस मैकियावेली का जन्म एक अपेक्षाकृत प्रमुख, हालांकि असाधारण रूप से धनी नहीं, फ्लोरेंटाइन परिवार में हुआ था। उनके पिता, बर्नार्डो डि निकोलस मैकियावेली, एक वकील थे। दांते एलीगिएरी उनके दूर के पूर्वज थे। मैकियावेली ने अपने समय के फ्लोरेंटाइन उच्च-मध्यम वर्ग के लिए विशिष्ट एक अच्छी मानवतावादी शिक्षा प्राप्त की। उन्हें शास्त्रीय लैटिन और इतालवी साहित्य का अच्छा ज्ञान था, विशेष रूप से लिवि जैसे प्राचीन रोमन इतिहासकारों के कार्यों का, जिन्होंने बाद में उनके राजनीतिक लेखन को गहराई से प्रभावित किया। उनकी शिक्षा में अलंकार शास्त्र (rhetoric), व्याकरण (grammar) और इतिहास पर जोर दिया गया था, लेकिन उन्होंने ग्रीक का अध्ययन नहीं किया, जो मानवतावादियों के बीच तेजी से आम होता जा रहा था। उनका बौद्धिक विकास पुनर्जागरण फ्लोरेंस के जीवंत बौद्धिक और राजनीतिक माहौल से आकार लेता था, एक ऐसा गणराज्य जो अक्सर आंतरिक विभाजनों और बाहरी खतरों से भरा होता था।

2. दार्शनिक, राजनीतिक या वैचारिक प्रभाव

मैकियावेली की सोच उनके समय की राजनीतिक वास्तविकताओं के प्रति एक व्यावहारिक प्रतिक्रिया थी, जो शास्त्रीय और समकालीन प्रभावों से heavily सूचित थी:

- शास्त्रीय रोमन गणतंत्रवाद (Classical Roman Republicanism): उनका सबसे गहरा बौद्धिक प्रभाव प्राचीन रोम से आया, विशेष रूप से रोमन गणराज्य से। उन्होंने रोमन नागरिक सद्गुण, उनके सैन्य अनुशासन, उनकी संस्थागत स्थिरता (विशेष रूप से मिश्रित संविधान), और एक साम्राज्य का विस्तार और रखरखाव करने की उनकी क्षमता की प्रशंसा की। उनका डिस्कॉर्स ऑन लिवि (Discourses on Livy) रोमन इतिहास पर एक विस्तृत टिप्पणी है, जो समकालीन राजनीतिक जीवन के लिए सबक निकालती है।
- समकालीन इतालवी राजनीति: पुनर्जागरण इटली के खंडित और लगातार युद्धरत शहर-राज्यों (फ्लोरेंस, वेनिस, मिलान, रोम, नेपल्स) ने उनके विचारों के लिए तत्काल संदर्भ प्रदान किया। उन्होंने स्वयं शासनों के उत्थान और पतन, भाड़े के सैनिकों (mercenary armies) के कारण हुई अस्थिरता, और विदेशी शक्तियों (फ्रांस, स्पेन, पवित्र रोमन साम्राज्य) के हस्तक्षेप को देखा। सेसारे बोर्गिया (पोप अलेक्जेंडर VI के पुत्र) जैसे शख्सियतों द्वारा इस्तेमाल की गई क्रूर रणनीति ने उन्हें intrigued किया और द प्रिंस के लिए एक केस स्टडी बन गई।
- मानवतावाद (लेकिन एक मोड़ के साथ): शास्त्रीय शिक्षा और मानव एजेंसी (human agency) पर जोर देने वाले मानवतावादी आंदोलन का एक उत्पाद होने के बावजूद, मैकियावेली ने स्वयं के अंत के रूप में नागरिक सद्गुण और नैतिक पूर्णता पर पारंपरिक मानवतावादी ध्यान से प्रस्थान किया। उन्होंने राजनीति पर मानवतावादी तरीकों (ऐतिहासिक विश्लेषण, व्यावहारिक अवलोकन) को लागू किया, लेकिन एक मौलिक रूप से अलग निष्कर्ष पर पहुंचे: कि राजनीति एक अलग, स्वायत्त क्षेत्र थी जो अपने नियमों द्वारा शासित थी।

- विद्वत्तावाद (Scholasticism) और आदर्शवाद (Idealism) की अस्वीकृति: उन्होंने स्पष्ट रूप से मध्यकालीन विद्वत्तापूर्ण परंपरा (उदाहरण के लिए, एक्विनास) को अस्वीकार कर दिया जिसने राजनीति को धर्मशास्त्र और नैतिकता के साथ एकीकृत करने की कोशिश की थी। उन्होंने यूटोपियन राजनीतिक दार्शनिकों (उदाहरण के लिए, प्लेटो, यहां तक कि उनके समकालीन मानवतावादी) से भी विचलन किया, जिन्होंने आदर्श राज्यों की कल्पना की थी। मैकियावेली ने इस बात के अनुभवजन्य अवलोकन पर ध्यान केंद्रित किया कि शक्ति का वास्तव में कैसे प्रयोग किया जाता है।

3. प्रमुख राजनीतिक विचार, सिद्धांत या अवधारणाएं

मैकियावेली का राजनीतिक दर्शन उसके यथार्थवाद, व्यावहारिकता और नैतिक शुद्धता के बजाय प्रभावी शासन पर ध्यान केंद्रित करने की विशेषता है।

a. राजनीतिक यथार्थवाद / राजनीति की स्वायत्तता

- परिभाषा: मैकियावेली ने राजनीति को नैतिकता और धर्म से अलग किया, इसे अपने अंतर्निहित नियमों के साथ एक स्वायत्त क्षेत्र के रूप में माना। उनका मानना था कि राजनीति का अध्ययन वैसे ही किया जाना चाहिए जैसा वह है, न कि जैसा होना चाहिए।
- व्याख्या: पिछले विचारकों के विपरीत जिन्होंने राजनीति को नैतिकता या धर्मशास्त्र की एक शाखा के रूप में देखा, मैकियावेली ने तर्क दिया कि एक शासक की सफलता और एक राज्य की स्थिरता नैतिक सिद्धांतों (जैसे न्याय, दया, सत्यता) के पालन पर नहीं, बल्कि व्यावहारिक प्रभावशीलता पर निर्भर करती है। यदि राज्य के अस्तित्व के लिए स्थिति की मांग हो, तो एक शासक को अनैतिक या क्रूर होने की आवश्यकता हो सकती है। उन्होंने चीजों की वास्तविक सत्यता (effectual truth) पर ध्यान केंद्रित किया, जिसका अर्थ है कि दुनिया में चीजें वास्तव में कैसे काम करती हैं, बजाय आदर्शवादी धारणाओं के।

b. वर्चु (Virtù) (गुण / कौशल / निपुणता)

- परिभाषा: मैकियावेली के लिए, वर्चु (लैटिन वर्टुस से व्युत्पन्न एक शब्द, जिसका अर्थ मर्दानगी, शक्ति या उत्कृष्टता है) पारंपरिक नैतिक गुण (जैसे ईमानदारी या उदारता) नहीं है, बल्कि शासक के लिए शक्ति प्राप्त करने और बनाए रखने के लिए आवश्यक गुणों का एक समूह है। इसमें कौशल, दृढ़ संकल्प, दूरदर्शिता, अनुकूलनशीलता, साहस और आवश्यकता पड़ने पर निर्णायक रूप से, यहां तक कि क्रूरता से भी कार्य करने की क्षमता शामिल है।
- व्याख्या: वर्चु रखने वाला शासक बदलती परिस्थितियों को समझने और उनके अनुकूल होने, खतरों का अनुमान लगाने, अवसरों को हथियाने और अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रभावी ढंग से शक्ति का उपयोग करने में सक्षम होता है। इसका अर्थ है कि आवश्यकतानुसार "शेर" (बलवान और निर्णायक) और "लोमड़ी" (चालाक और भ्रामक) के बीच स्विच करने में सक्षम होना। वर्चु घटनाओं को आकार देने की मानवीय क्षमता है, फॉर्टुना की अप्रत्याशितता को दूर करने के लिए।

c. फॉर्टुना (Fortuna) (भाग्य / किस्मत / परिस्थितियाँ)

- परिभाषा: फॉर्टुना अप्रत्याशित और अनियंत्रित बाहरी परिस्थितियों, भाग्य, नियति या संयोग का प्रतिनिधित्व करती है जो राजनीतिक परिणामों को प्रभावित करती है।
- व्याख्या: मैकियावेली ने पहचाना कि मानवीय मामले पूरी तरह से मानव नियंत्रण में नहीं हैं। फॉर्टुना मानवीय कार्यों का वह आधा हिस्सा है जो बाहरी ताकतों द्वारा शासित होता है। हालांकि, उन्होंने तर्क दिया कि एक कुशल शासक (वर्चु वाला) प्रतिकूलता की तैयारी करके और अवसर मिलने पर निर्णायक रूप से कार्य करके फॉर्टुना के प्रभावों को कम कर सकता है। उन्होंने प्रसिद्ध रूप से फॉर्टुना की तुलना बाढ़ में बहती नदी से की, जिसे अग्रिम रूप से बांध और तटबंध बनाकर प्रबंधित किया जा सकता है।

d. साधन साध्य को उचित ठहराते हैं (राज्य का अस्तित्व)

- परिभाषा: हालांकि यह सीधा उद्धरण नहीं है, लेकिन यह अक्सर-जिम्मेदार वाक्यांश मैकियावेली के मूल व्यावहारिक रुख को दर्शाता है: कि एक शासक को राज्य और अपनी शक्ति को बनाए रखने के लिए जो कुछ भी आवश्यक हो वह करना चाहिए, भले ही इसमें आम तौर पर अनैतिक माने जाने वाले कार्य शामिल हों।
- व्याख्या: मैकियावेली के लिए, राजनीति में सर्वोच्च भलाई राज्य का संरक्षण और स्थिरता (या राजकुमार की शक्ति, जिसे उन्होंने राज्य की स्थिरता से जुड़ा हुआ देखा) है। यदि इस अंत को प्राप्त करने के लिए झूठ बोलना, धोखा देना, या यहां तक कि हिंसा की आवश्यकता है, तो एक बुद्धिमान शासक को इससे पीछे नहीं हटना चाहिए। उनका मानना था कि अपूर्ण और अक्सर दुष्ट पुरुषों की दुनिया में, एक शासक जो हमेशा अच्छा बनने की कोशिश करता है, वह अनिवार्य रूप से नष्ट हो जाएगा। इसलिए, शासक को आवश्यकता पड़ने पर "अच्छा न होना" सीखना चाहिए।

e. भय बनाम प्रेम

- परिभाषा: मैकियावेली ने प्रसिद्ध रूप से यह पता लगाया कि क्या एक राजकुमार के लिए अपने विषयों द्वारा प्यार किया जाना या डराया जाना बेहतर है।
- व्याख्या: उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि हालांकि दोनों को प्यार और डर दोनों होना आदर्श होगा, यदि किसी को चुनना हो, तो डरना सुरक्षित है। प्यार अस्थिर होता है और विषयों की इच्छा पर निर्भर करता है, जो बदल सकता है। डर, हालांकि, दंड के खतरे पर आधारित होता है, जो स्थिर और विश्वसनीय होता है। हालांकि, उन्होंने चेतावनी दी कि डर से नफरत नहीं होनी चाहिए, क्योंकि नफरत विद्रोह को भड़का सकती है। एक राजकुमार को संपत्ति जब्त करने या महिलाओं का उल्लंघन करने से बचना चाहिए, क्योंकि ये कार्य नफरत पैदा करते हैं।

f. राजनीति में धर्म की भूमिका (नागरिक धर्म)

- परिभाषा: मैकियावेली ने धर्म को मोक्ष के लिए पालन किए जाने वाले एक दिव्य सत्य के रूप में नहीं देखा, बल्कि सामाजिक व्यवस्था, नागरिक सद्गुण और राज्य की एकता बनाए रखने के लिए एक उपयोगी उपकरण के रूप में देखा।
- व्याख्या: उन्होंने प्राचीन रोम के नागरिक धर्म की प्रशंसा की, जिसने नागरिकों के बीच देशभक्ति, साहस और आज्ञाकारिता को बढ़ावा दिया। उन्होंने ईसाई धर्म की आलोचना की, विशेष रूप से पोपशाही की, पुरुषों को meek और otherworldly बनाने के लिए, जिससे राज्य कमजोर हुआ। उन्होंने तर्क दिया कि एक शासक को धार्मिक दिखना चाहिए, भले ही वह न हो, क्योंकि धार्मिक भक्ति आबादी को नियंत्रित करने और उनका सम्मान और आज्ञाकारिता प्राप्त करने में मदद करती है।

4. सभी पुस्तकें और निबंध

मैकियावेली का साहित्यिक उत्पादन, हालांकि शीर्षकों की संख्या में अपेक्षाकृत छोटा है, बहुत प्रभावशाली है।

a. इल प्रिंसिपे (द प्रिंस)

- प्रकाशन का वर्ष: 1513 ई. में लिखा गया; पहली बार मरणोपरांत 1532 ई. में प्रकाशित हुआ।
- सारांश: यह संक्षिप्त ग्रंथ, जिसे अक्सर उनका सबसे प्रसिद्ध और विवादास्पद कार्य माना जाता है, एक नए राजकुमार को सलाह देता है कि शक्ति कैसे प्राप्त करें, बनाए रखें और विस्तार करें। यह स्पष्ट रूप से राजनीति को पारंपरिक नैतिकता से अलग करता है, यह तर्क देते हुए कि एक शासक को अक्सर धोखे, क्रूरता और अन्य नैतिक रूप से आपत्तिजनक कृत्यों का सहारा लेना पड़ता है यदि वे राज्य के अस्तित्व के लिए आवश्यक हैं। यह मानव स्वभाव का स्वाभाविक रूप से स्वार्थी और अविश्वसनीय रूप से विश्लेषण करता है, और राजकुमार से पारंपरिक सद्गुणों पर राजनीतिक समीचीनता को प्राथमिकता देने का आग्रह करता है।

b. डिस्कॉर्सी सोप्रा ला प्रीमा डेका डि टिटो लिवियो (टाइट्स लिवि की पहली दस पुस्तकों पर प्रवचन)

- प्रकाशन का वर्ष: लगभग 1514-1519 ई. में लिखा गया; पहली बार मरणोपरांत 1531 ई. में प्रकाशित हुआ।

- सारांश: अक्सर द प्रिंस की तुलना में मैकियावेली के राजनीतिक विचार का अधिक व्यापक और शायद अधिक वास्तविक रूप से प्रतिनिधि कार्य माना जाता है। प्रवचनों में, वह रोमन गणराज्य के इतिहास (लिवि के एब उर्बे कॉन्डिटा पर आधारित) का विश्लेषण करते हैं, जो गणतांत्रिक शासन के लिए सबक निकालते हैं। वह गणतंत्रवाद, नागरिक सद्गुण, एक मिश्रित संविधान (राजशाही, कुलीन और लोकतांत्रिक तत्वों को संतुलित करना), और राष्ट्रीय शक्ति और स्थिरता के लिए नागरिक मिलिशिया के महत्व का समर्थन करते हैं। वह तर्क देते हैं कि गणराज्य लंबे समय में रियासतों की तुलना में अधिक स्थिर और अनुकूलनीय होते हैं।

c. डेल'आर्टे डेला गुएरा (युद्ध की कला)

- प्रकाशन का वर्ष: लगभग 1519-1520 ई. में लिखा गया; पहली बार 1521 ई. में प्रकाशित हुआ।
- सारांश: मैकियावेली का एकमात्र प्रमुख कार्य उनके जीवनकाल में प्रकाशित हुआ। एक संवाद के रूप में लिखा गया, यह सैन्य संगठन, रणनीति और रणनीति पर चर्चा करता है। वह रोमन सैन्य इतिहास से सबक लेते हुए, अविश्वसनीय भाड़े के सैनिकों के बजाय नागरिक सेनाओं (मिलिशिया) के लिए भावुकता से वकालत करते हैं। वह सैन्य अनुशासन, प्रशिक्षण, और सैन्य शक्ति और राज्य के राजनीतिक स्वास्थ्य के बीच मजबूत संबंध के महत्व पर जोर देते हैं।

d. इस्टोरिए फियोरेंटिन (फ्लोरेंटाइन इतिहास)

- प्रकाशन का वर्ष: लगभग 1520-1525 ई. में लिखा गया; पहली बार मरणोपरांत 1532 ई. में प्रकाशित हुआ।
- सारांश: फ्लोरेंस के अपने मूल से 1492 में लोरेंजो डे' मेडिसी की मृत्यु तक का एक ऐतिहासिक विवरण। मेडिसी परिवार द्वारा कमीशन किया गया, यह कार्य राजनीतिक विश्लेषण के साथ ऐतिहासिक कथा को जोड़ता है, फ्लोरेंटाइन अस्थिरता और गुटबाजी के कारणों का पता लगाता है। मैकियावेली अपने राजनीतिक सिद्धांतों को चित्रित करने के लिए इतिहास का उपयोग करते हैं, सरकारों के चक्रीय प्रकृति और आंतरिक विभाजनों के विनाशकारी प्रभावों पर जोर देते हैं।

e. ला मंद्रागोला (द मंड्रेक)

- प्रकाशन का वर्ष: लगभग 1518 ई. (पहली बार 1518 में प्रदर्शित, 1524 में प्रकाशित)।
- सारांश: एक व्यंग्यात्मक पांच-अंकीय कॉमेडी नाटक, जिसे व्यापक रूप से सबसे महान इतालवी पुनर्जागरण कॉमेडी में से एक माना जाता है। यह फ्लोरेंटाइन समाज के भ्रष्टाचार और नैतिक क्षय पर व्यंग्य करता है, जिसमें चालाकी, धोखे और पाखंड को केंद्रीय विषयों के रूप में उपयोग किया जाता है। हालांकि एक हास्यपूर्ण कार्य, यह मानव स्वभाव और समाज के प्रति मैकियावेली के निंदनीय दृष्टिकोण को दर्शाता है, जो उनके राजनीतिक ग्रंथों के विषयों को प्रतिध्वनित करता है।

5. उद्धरण और उनकी व्याख्या

मैकियावेली के कार्य तेज, अक्सर उत्तेजक और यादगार बयानों से भरे हुए हैं।

1. "प्यार किए जाने से बेहतर है कि डराया जाए, अगर आप दोनों नहीं हो सकते।"
    - स्रोत: द प्रिंस, अध्याय XVII।
    - व्याख्या: यह शायद मैकियावेली की सबसे प्रसिद्ध और कुख्यात पंक्ति है। यह शक्ति के प्रति उनके व्यावहारिक दृष्टिकोण को सारांशित करता है। वह तर्क देते हैं कि प्यार अविश्वसनीय और परिवर्तन के अधीन है, जबकि डर, दंड पर आधारित, आज्ञाकारिता के लिए एक अधिक सुसंगत प्रेरक है। हालांकि, वह तुरंत इस बात को योग्य बनाता है कि एक राजकुमार को नफरत करने से बचना चाहिए, क्योंकि नफरत साजिशों और विद्रोह को जन्म दे सकती है। अंतिम लक्ष्य सुरक्षा और नियंत्रण है।
2. "साधन साध्य को उचित ठहराते हैं।"
    - स्रोत: हालांकि अक्सर मैकियावेली को जिम्मेदार ठहराया जाता है, यह सटीक वाक्यांश उनके कार्यों में नहीं मिलता है। हालांकि, यह भावना उनके नैतिक रुख को पूरी तरह से समाहित करती है, विशेष रूप से द प्रिंस में। वह अध्याय XVIII में लिखते हैं: "सभी पुरुषों के कार्यों में, और विशेष रूप से राजकुमारों के, जहां हम

अपील कर सकते हैं कोई न्यायाधिकरण नहीं है, हम अंत को देखते हैं। तो एक राजकुमार को अपना राज्य जीतना और बनाए रखना चाहिए; साधन हमेशा सम्मानजनक माने जाएंगे, और सभी द्वारा सराहे जाएंगे।"
    - व्याख्या: यह मैकियावेली के राजनीतिक यथार्थवाद को दर्शाता है। उनके लिए, शासक का सर्वोच्च लक्ष्य राज्य का संरक्षण है। यदि इस महत्वपूर्ण अंत को प्राप्त करने के लिए अनैतिक कार्य (धोखा, क्रूरता, टूटे वादे) आवश्यक हैं, तो वे, एक राजनीतिक दृष्टिकोण से, न्यायसंगत और यहां तक कि सराहनीय भी हैं। उन्होंने कार्यों को राज्य के लिए उनके व्यावहारिक परिणामों से आंका, न कि अमूर्त नैतिक संहिताओं के पालन से।
3. "हर कोई देखता है कि आप क्या दिखते हैं, कुछ ही जानते हैं कि आप वास्तव में क्या हैं।"
    - स्रोत: द प्रिंस, अध्याय XVIII।
    - व्याख्या: यह उद्धरण राजनीति में दिखावे के महत्व पर मैकियावेली के जोर को उजागर करता है। एक राजकुमार को सद्गुण की सार्वजनिक छवि (उदाहरण के लिए, धर्मनिष्ठा, दया, अखंडता) विकसित करनी चाहिए, भले ही वह निजी तौर पर या आवश्यकता पड़ने पर इन सद्गुणों के विपरीत कार्य करता हो। शासक की धारणा अक्सर शक्ति और लोकप्रिय समर्थन बनाए रखने के लिए उसके वास्तविक चरित्र से अधिक महत्वपूर्ण होती है।
4. "मुसीबत से बचने का कोई तरीका नहीं है सिवाय युद्ध से बचने के; और जब आप उसमें हों तो उसे जीतने के लिए, आपको सशस्त्र होना चाहिए।"
    - स्रोत: द आर्ट ऑफ वॉर, पुस्तक I।
    - व्याख्या: यह राज्य के अस्तित्व के लिए सैन्य शक्ति की आवश्यकता में मैकियावेली के मजबूत विश्वास पर जोर देता है। वह तर्क देते हैं कि एक राज्य अनिश्चित काल तक संघर्ष से बच नहीं सकता है, और जब युद्ध आता है, तो उसे लड़ने और जीतने के लिए तैयार रहना चाहिए। निरस्त्रीकरण या दूसरों (भाड़े के सैनिकों) पर निर्भरता केवल कमजोरी और अंततः अधीनता की ओर ले जाती है। यह नागरिक मिलिशिया और मजबूत सैन्य तैयारी के लिए उनकी वकालत को दर्शाता है।

6. आंदोलन या क्रांतियाँ, भूमिकाएँ और प्रभाव

मैकियावेली किसी लोकप्रिय आंदोलन या क्रांति के नेता नहीं थे, बल्कि फ्लोरेंटाइन गणराज्य के अशांत राजनीतिक जीवन के एक सक्रिय भागीदार और पर्यवेक्षक थे।

- एक राजनयिक और प्रशासक के रूप में भूमिका: उनका सबसे महत्वपूर्ण "आंदोलन" मेडिसी के निष्कासन के बाद गणतंत्रवादी शासन (1498-1512) की अवधि के दौरान फ्लोरेंटाइन गणराज्य के प्रति उनकी वफादार सेवा थी। उन्होंने फ्लोरेंटाइन गणराज्य के द्वितीय चांसलर के रूप में कार्य किया, विदेशी मामलों, सैन्य मामलों और आंतरिक सुरक्षा को संभाला। उन्होंने विभिन्न इतालवी राज्यों, फ्रांस के राजा, पवित्र रोमन सम्राट मैक्सिमिलियन I और पोप जूलियस II को कई राजनयिक मिशनों पर भेजा। इन अनुभवों ने उन्हें शक्ति के कामकाज, शासकों की प्रेरणाओं और अंतरराष्ट्रीय संबंधों की प्रकृति में प्रत्यक्ष अंतर्दृष्टि दी।
- एक नागरिक मिलिशिया स्थापित करने का प्रयास: उनकी सबसे महत्वाकांक्षी परियोजनाओं में से एक अविश्वसनीय भाड़े के सैनिकों को बदलने के लिए एक फ्लोरेंटाइन नागरिक मिलिशिया स्थापित करना था। उनका मानना था कि एक गणराज्य की ताकत उसके अपने सशस्त्र नागरिकों में निहित है। उन्होंने इसे कुछ हद तक सफलतापूर्वक लागू किया, पीसा की घेराबंदी (1509) में एक नवगठित मिलिशिया का नेतृत्व किया, जिससे फ्लोरेंटाइन को जीत मिली।
- मेडिसी बहाली का प्रभाव (1512): जब 1512 में मेडिसी परिवार फ्लोरेंस में सत्ता में लौटा, तो मैकियावेली को, गणतंत्रवादी सरकार के एक प्रमुख व्यक्ति के रूप में, पद से बर्खास्त कर दिया गया, संक्षेप में कैद किया गया, यातना दी गई, और फिर शहर से उनकी छोटी संपत्ति सैंट'एंड्रिया इन परकुसिना में निर्वासित कर दिया गया। सार्वजनिक जीवन से इस जबरन सेवानिवृत्ति ने उन्हें अपने सबसे प्रसिद्ध राजनीतिक कार्य लिखने के लिए समय और प्रेरणा प्रदान की।

7. आजीवन प्रमुख उपलब्धियां और राजनीति विज्ञान या सिद्धांत में योगदान

मैकियावेली के योगदान राजनीतिक विचार के लिए परिवर्तनकारी थे, जिससे उन्हें "आधुनिक राजनीति विज्ञान का जनक" की उपाधि मिली।

- आधुनिक राजनीति विज्ञान की स्थापना: उन्होंने नैतिक और धार्मिक आदर्शों से राजनीतिक विश्लेषण को मुक्त किया, राजनीति का एक अलग, स्वायत्त क्षेत्र के रूप में अध्ययन किया। उन्होंने आदर्शवादी आदर्शों के बजाय राजनीतिक व्यवहार के अनुभवजन्य अवलोकन पर ध्यान केंद्रित किया।
- राजनीतिक यथार्थवाद: उन्होंने राजनीति के प्रति एक व्यावहारिक और भावुक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया, यह तर्क देते हुए कि प्रभावी शासन को अक्सर ऐसे कार्यों की आवश्यकता होती है जो परंपरागत रूप से अनैतिक होते हैं, लेकिन राज्य के अस्तित्व के लिए आवश्यक होते हैं। इसने शास्त्रीय और मध्यकालीन राजनीतिक दर्शन से एक गहरा अलगाव चिह्नित किया।
- वर्चु (Virtù) और फॉर्टुना (Fortuna) पर जोर: उनके वर्चु (शासक का कौशल और अनुकूलनशीलता) और फॉर्टुना (अप्रत्याशित परिस्थितियाँ) की अवधारणाओं ने राजनीतिक परिणामों को आकार देने में मानवीय एजेंसी और बाहरी ताकतों के बीच परस्पर क्रिया को समझने के लिए एक ढाँचा प्रदान किया।
- नागरिक मिलिशिया के लिए वकालत: भाड़े के सैनिकों पर एक राष्ट्रीय, नागरिक सेना के लिए उनके मजबूत तर्क उनके समय के लिए क्रांतिकारी थे और बाद के सैन्य विचारकों और राष्ट्रीय सेनाओं के समर्थकों पर गहरा प्रभावशाली थे।
- गणतंत्रवाद (द प्रिंस से परे): जबकि द प्रिंस एक राजशाही पर केंद्रित है, उनके डिस्कॉर्स गणतंत्रवाद, नागरिक सद्गुण और एक मजबूत, स्व-शासित गणराज्य के लाभों के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करते हैं। उन्होंने यह समझने के लिए एक परिष्कृत विश्लेषण प्रदान किया कि गणराज्य स्थिरता और महानता कैसे प्राप्त कर सकते हैं।
- राजनीतिक विचार का धर्मनिरपेक्षता: शक्ति के उनके विश्लेषण में दैवीय कानून और पारंपरिक नैतिकता को काफी हद तक अनदेखा करके, उन्होंने राजनीतिक विचार के धर्मनिरपेक्षता में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिससे बाद के राजनीतिक दार्शनिकों के लिए स्पष्ट धार्मिक औचित्य के बिना राज्य का विश्लेषण करने का मार्ग प्रशस्त हुआ।

8. विवाद या आलोचनाएँ

मैकियावेली राजनीतिक विचार में सबसे विवादास्पद शख्सियतों में से एक बने हुए हैं।

- "मैकियावेलीवाद" / अनैतिकता (स्रोत: धार्मिक और नैतिक आलोचक, उदाहरण के लिए, प्रति-सुधार के आंकड़े, बाद के राजनीतिक विचारक): सबसे महत्वपूर्ण आलोचना अनैतिकता, निंदक और अत्याचार को बढ़ावा देने का आरोप है। "मैकियावेलीवादी" शब्द स्वयं एक अपमानजनक शब्द बन गया, राजनीति में चालाकी, धोखे और क्रूरता का पर्याय। आलोचकों, विशेष रूप से प्रति-सुधार के दौरान धार्मिक हस्तियों ने द प्रिंस को अ-ईसाई और बुराई का समर्थन माना। उनकी पुस्तकों को 1559 में पोप के निषिद्ध पुस्तकों के सूचकांक (Papal Index of Forbidden Books) पर रखा गया था।
  - आलोचना का विवरण: आलोचकों ने तर्क दिया कि राजकुमारों को झूठ बोलने, वादों को तोड़ने और आवश्यकता पड़ने पर हिंसा करने की सलाह देकर, मैकियावेली ने अनैतिक व्यवहार को माफ कर दिया और समाज की नैतिक नींव को कमजोर कर दिया। उन्होंने अपने काम को अत्याचार के लिए एक मैनुअल के रूप में देखा, जो बाकी सब से ऊपर शक्ति को प्राथमिकता देता था।
  - प्रति-तर्क (मैकियावेली के रक्षक/व्याख्या):
    - वर्णनात्मक बनाम निर्देशात्मक: कुछ तर्क देते हैं कि मैकियावेली केवल यह वर्णन कर रहे थे कि राजनीति कैसे व्यवहार की जाती है, न कि यह कि यह कैसे होनी चाहिए। वह शक्ति की कठोर वास्तविकताओं का विश्लेषण करने वाले एक यथार्थवादी थे।
    - राज्य के अस्तित्व के लिए आवश्यकता: अन्य तर्क देते हैं कि उन्होंने तर्क दिया कि ये क्रूर कार्य केवल तभी उचित हैं जब राज्य के अस्तित्व के लिए बिल्कुल आवश्यक हों, जो सामूहिक के लिए एक उच्च भलाई है। उन्होंने अनावश्यक क्रूरता की वकालत नहीं की।

    - लोक भलाई पर ध्यान: कुछ तर्क देते हैं कि मैकियावेली की अंतिम चिंता राज्य की स्थिरता और महानता थी, विशेष रूप से एक स्वतंत्र गणराज्य, और यह कि द प्रिंस में भी कठोर रणनीति अंततः एक बड़ी सार्वजनिक भलाई प्राप्त करने के उद्देश्य से थी।
    - संदर्भ: उनके लेखन को 16वीं शताब्दी के खंडित, हिंसक इटली के संदर्भ में समझा जाना चाहिए, जहां राज्य का अस्तित्व अनिश्चित था।
- मानव स्वभाव का निराशावादी दृष्टिकोण (स्रोत: आदर्शवादी दार्शनिक): उनकी यह धारणा कि मनुष्य स्वाभाविक रूप से स्वार्थी, अस्थिर और दुष्टता के प्रति प्रवृत्त होते हैं, को अत्यधिक निंदनीय और निराशावादी के रूप में आलोचना की गई है, जो वास्तव में सदाचारी शासन की संभावनाओं को सीमित करती है।

9. प्रमुख जीवन घटनाओं और राजनीतिक योगदानों की समयरेखा (वर्ष-वार)

- 1469: फ्लोरेंस में जन्म।
- 1494: मेडिसी शासकों को फ्लोरेंस से निष्कासित किया गया; सवोनारोला के प्रभाव में फ्लोरेंटाइन गणराज्य की स्थापना।
- 1498: सवोनारोला को फाँसी दी गई। मैकियावेली सार्वजनिक सेवा में प्रवेश करते हैं, फ्लोरेंटाइन गणराज्य के द्वितीय चांसरी (विदेशी मामलों और सैन्य मामलों के लिए जिम्मेदार) के लिए चुने गए।
- 1499-1512: इटली (सेसारे बोर्गिया, सिएना, पीसा, पापल स्टेट्स), फ्रांस (राजा लुई XII), और पवित्र रोमन सम्राट मैक्सिमिलियन I के लिए कई राजनयिक मिशनों पर जाते हैं।
- 1502: सेसारे बोर्गिया के दूत के रूप में सेवा की, उनकी क्रूर प्रभावशीलता को देखा।
- 1506: नौ के सचिव नियुक्त किए गए, जो फ्लोरेंस की नई नागरिक मिलिशिया को व्यवस्थित करने के लिए जिम्मेदार एक परिषद थी।
- 1509: पीसा की सफल घेराबंदी में फ्लोरेंटाइन मिलिशिया का नेतृत्व किया।
- 1512: स्पेनिश सेनाओं ने प्रातो में फ्लोरेंटाइन मिलिशिया को हराया। मेडिसी परिवार फ्लोरेंस में सत्ता में लौट आया, गणराज्य का अंत हुआ। मैकियावेली को पद से बर्खास्त कर दिया गया।
- 1513 (फरवरी): मेडिसी के खिलाफ साजिश के संदेह में कैद और यातना दी गई। रिहा हुए और फ्लोरेंस के बाहर अपने सैंट'एंड्रिया इन परकुसिना में अपनी संपत्ति पर सेवानिवृत्त हुए।
- 1513: द प्रिंस लिखना शुरू किया।
- लगभग 1514-1519: डिस्कॉर्स ऑन लिवि लिखा।
- लगभग 1518: नाटक ला मंद्रागोला लिखा।
- लगभग 1519-1520: द आर्ट ऑफ वॉर लिखा।
- 1520-1525: कार्डिनल गियूलियो डे' मेडिसी (बाद में पोप क्लेमेंट VII) द्वारा फ्लोरेंटाइन हिस्ट्रीज लिखने के लिए कमीशन किया गया।
- 1526: चार्ल्स V के खिलाफ लीग ऑफ कॉग्नाक युद्ध के दौरान छोटी सैन्य भूमिकाओं में सेवा की।
- 1527 (मई): शाही सैनिकों ने रोम को बर्खास्त कर दिया। मेडिसी को फिर से फ्लोरेंस से निष्कासित कर दिया गया, और गणराज्य संक्षेप में फिर से स्थापित किया गया। मैकियावेली को सार्वजनिक पद पर लौटने की उम्मीद थी लेकिन नई गणतंत्रवादी सरकार ने उन पर अविश्वास किया।
- 1527 (21 जून): फ्लोरेंस में निधन हो गया, काफी हद तक निराश।

10. कम ज्ञात तथ्य या उनके व्यक्तित्व या कार्य के अद्वितीय पहलू

- एक "दुखद" व्यक्ति: मैकियावेली के जीवन को, विशेष रूप से उनके निर्वासन और महत्वपूर्ण सार्वजनिक सेवा में लौटने में असमर्थता को दुखद देखा गया है। उनका वास्तव में मानना था कि उनकी सलाह इटली को विदेशी प्रभुत्व और आंतरिक कलह से बचाने में मदद कर सकती है, लेकिन उन्हें उन शासकों द्वारा काफी हद तक गलत समझा गया या खारिज कर दिया गया जिन्हें वे सलाह देना चाहते थे।
- एक देशभक्त: अपनी निंदनीय प्रतिष्ठा के बावजूद, मैकियावेली एक गहरे देशभक्त फ्लोरेंटाइन और इतालवी थे। उनका अंतिम लक्ष्य एक मजबूत, एकीकृत और स्वतंत्र इटली देखना था, जो विदेशी हस्तक्षेप से मुक्त हो, जिसके

बारे में उनका मानना था कि यह केवल मजबूत नेतृत्व और प्रभावी सैन्य संगठन के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है।

- स्वयं कोई अत्याचारी नहीं: विडंबना यह है कि जिस व्यक्ति ने क्रूरता के लिए एक मैनुअल लिखा, वह स्वयं एक क्रूर अत्याचारी नहीं था। वह एक सिविल सेवक, एक राजनयिक और एक विद्वान थे जिन्होंने अपनी राजनीतिक मान्यताओं के लिए यातना और निर्वासन का अनुभव किया।
- भाषाई नवप्रवर्तक: अपने प्रमुख राजनीतिक कार्यों को इतालवी देशज भाषा (फ्लोरेंटाइन बोली) में लैटिन के बजाय लिखने का उनका चुनाव महत्वपूर्ण था। इसने गंभीर बौद्धिक प्रवचन के लिए इतालवी भाषा के मानकीकरण और लोकतंत्रीकरण में योगदान दिया।
- हास्य बोध: उनका व्यंग्यात्मक नाटक ला मंद्रागोला हास्य की एक गहरी लेकिन तीक्ष्ण भावना और एक निंदनीय बुद्धि को प्रकट करता है जो अक्सर केवल द प्रिंस से परिचित पाठकों को आश्चर्यचकित करता है।
- "राजकुमारों के लिए दर्पण" शैली: द प्रिंस मध्यकालीन और पुनर्जागरण शैली से संबंधित है जिसे "राजकुमारों के लिए दर्पण" (स्पेक्कुलम प्रिंसिपिस) कहा जाता है, जिसने शासकों को सलाह दी थी। हालांकि, मैकियावेली ने अपनी पारंपरिक नैतिकवादी शैली से मौलिक रूप से विचलित होकर इस शैली को पलट दिया।

थॉमस हॉब्स: निरंकुश संप्रभुता और सामाजिक अनुबंध के दार्शनिक

थॉमस हॉब्स (1588 – 1679 ई.) एक अंग्रेज दार्शनिक थे, जिन्हें आधुनिक राजनीतिक दर्शन के संस्थापकों में से एक माना जाता है। इंग्लैंड में एक बड़े राजनीतिक और सामाजिक उथल-पुथल, जिसमें अंग्रेजी गृहयुद्ध (English Civil War) भी शामिल था, के दौरान रहते हुए, हॉब्स ने एक कठोर और व्यवस्थित राजनीतिक सिद्धांत विकसित किया, जो "प्राकृतिक अवस्था" (state of nature) में निहित अराजकता और हिंसा को रोकने के लिए एक मजबूत, निरंकुश संप्रभु (absolute sovereign) की आवश्यकता पर केंद्रित था। उनकी उत्कृष्ट कृति, लेवियाथन (Leviathan), राजनीतिक विचार में एक मूलभूत पाठ बनी हुई है, जो सामाजिक अनुबंध (social contract), संप्रभुता (sovereignty) और मनुष्य के स्वभाव पर चर्चाओं को आकार देती है।

1. प्रारंभिक जीवन और शिक्षा

- जन्म तिथि: 5 अप्रैल, 1588 ई.
- जन्म स्थान: वेस्टपोर्ट, विल्टशायर, इंग्लैंड साम्राज्य (अब माल्मेस्बरी का हिस्सा)
- मृत्यु तिथि: 4 दिसंबर, 1679 ई.
- मृत्यु स्थान: हार्डविक हॉल, डर्बीशायर, इंग्लैंड साम्राज्य

थॉमस हॉब्स का जन्म समय से पहले हो गया था जब उनकी माँ ने आसन्न स्पेनिश आर्मडा (Spanish Armada) की खबर सुनी थी, एक ऐसा तथ्य जिसे उन्होंने बाद में प्रसिद्ध रूप से अपने जन्म के साथ भय से जोड़ा। उनके पिता, एक स्थानीय पादरी, ने परिवार को छोड़ दिया, और हॉब्स को उनके चाचा ने पाला। उन्होंने वेस्टपोर्ट चर्च में, फिर एक निजी स्कूल में अच्छी प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की, जिसमें शुरुआती बौद्धिक क्षमता दिखाई दी।

1603 में, 15 साल की उम्र में, उन्होंने ऑक्सफोर्ड के मैग्डलीन हॉल (Magdalen Hall) में प्रवेश किया। वहां उनका अध्ययन पारंपरिक था, जो विद्वत्तापूर्ण तर्क और दर्शनशास्त्र पर केंद्रित था। हालांकि उन्होंने बाद में विद्वत्तावाद (scholasticism) के प्रति तिरस्कार व्यक्त किया, लेकिन उनकी ऑक्सफोर्ड शिक्षा ने उन्हें औपचारिक तर्क में एक कठोर आधार प्रदान किया।

1608 में स्नातक होने के बाद, हॉब्स ने प्रभावशाली कैवेंडिश परिवार (Cavendish family) के साथ आजीवन संबंध शुरू किया, मुख्य रूप से विलियम कैवेंडिश, भविष्य के डेवोनशायर के दूसरे अर्ल (2nd Earl of Devonshire) के ट्यूटर के रूप में। इस पद ने उन्हें वित्तीय स्थिरता, व्यापक पुस्तकालयों तक पहुंच और महत्वपूर्ण यूरोपीय यात्रा (ग्रांड टूर) का अवसर प्रदान किया। इन यात्राओं ने उन्हें महाद्वीपीय बौद्धिक धाराओं, विशेष रूप से बढ़ते वैज्ञानिक और गणितीय क्रांतियों से अवगत कराया, जिसने उनके दार्शनिक विधि को गहराई से प्रभावित किया। वे गैलीलियो गैलीली (Galileo Galilei) और रेने डेसकार्टेस (René Descartes) जैसे शख्सियतों से मिले, ब्रह्मांड के एक यांत्रिक दृष्टिकोण (mechanistic view) और ज्ञान के लिए एक निगमनात्मक दृष्टिकोण (deductive approach) को अपनाया।

2. दार्शनिक, राजनीतिक या वैचारिक प्रभाव

हॉब्स का अद्वितीय राजनीतिक दर्शन शास्त्रीय विचार और उनके युग के अत्याधुनिक वैज्ञानिक और राजनीतिक विकास दोनों के साथ उनके जुड़ाव का एक उत्पाद था।

- वैज्ञानिक क्रांति और यांत्रिकी (Scientific Revolution and Mechanism): हॉब्स गैलीलियो गैलीली और जोहान्स केप्लर (Johannes Kepler) के यांत्रिक दर्शन और यूक्लिड (Euclid) की ज्यामितीय विधि से गहराई से प्रभावित थे। उन्होंने मानव व्यवहार और राजनीतिक संगठन पर भौतिकी और ज्यामिति के सिद्धांतों (स्पष्ट परिभाषाओं से निगमनात्मक तर्क) को लागू करने की कोशिश की। उनका मानना था कि ब्रह्मांड, मनुष्यों सहित, गति में पदार्थ की एक प्रणाली के रूप में समझा जा सकता है, और यह कि राजनीति विज्ञान ज्यामिति जितना कठोर हो सकता है।
- थ्यूसीडाइड्स की पेलेपोनेसियन युद्ध का इतिहास (Thucydides's *History of the Peloponnesian War*): हॉब्स ने 1628 में थ्यूसीडाइड्स के काम का अनुवाद किया। संघर्ष में मानव स्वभाव, राज्यों द्वारा शक्ति की

खोज, और नागरिक कलह के विनाशकारी परिणामों का थ्यूसीडाइड्स का यथार्थवादी चित्रण हॉब्स के साथ गहराई से प्रतिध्वनित हुआ और मानव स्वभाव के प्रति उनके निराशावादी दृष्टिकोण को मजबूत किया।

- अंग्रेजी गृहयुद्ध (English Civil War): अंग्रेजी गृहयुद्ध (1642-1651) की अराजकता, हिंसा और अनिश्चितता, जिसने उन्हें निर्वासन में मजबूर किया, उनके राजनीतिक विचार पर सबसे तत्काल और गहरा प्रभाव था। स्थापित अधिकार के पतन और उसके बाद के रक्तपात को देखने के बाद उन्हें समाज को "सभी के खिलाफ सभी के युद्ध" (war of all against all) में पतित होने से रोकने के लिए एक मजबूत संप्रभु शक्ति की पूर्ण आवश्यकता पर विश्वास हो गया।
- रोमन कानून और निरंकुशता (Roman Law and Absolutism): हालांकि दिव्य अधिकार सिद्धांत (divine right theory) से अलग, हॉब्स की एक एकल, सर्वोच्च और अविभाज्य संप्रभु के लिए वकालत में कुछ यूरोपीय राज्यों में पाए जाने वाले निरंकुश राजशाही की प्रचलित अवधारणा के साथ कुछ व्यावहारिक समानताएं थीं।

3. प्रमुख राजनीतिक विचार, सिद्धांत या अवधारणाएं

हॉब्स का राजनीतिक दर्शन सरकार के बिना मानव स्वभाव और समाज के एक कठोर विश्लेषण से शुरू होता है, जिससे उनका प्रसिद्ध सामाजिक अनुबंध सिद्धांत (social contract theory) सामने आता है।

a. प्राकृतिक अवस्था **(**बेलम ओमनिअम कोंट्रा ओमनेस**)**

- परिभाषा: हॉब्स ने एक काल्पनिक "प्राकृतिक अवस्था" को किसी भी शासी प्राधिकरण, कानूनों या नैतिकता के बिना मानवता की स्थिति के रूप में प्रस्तुत किया।
- व्याख्या: इस अवस्था में, लोगों को भयभीत रखने के लिए कोई सामान्य शक्ति नहीं होती है। नतीजतन, जीवन "हर आदमी के खिलाफ हर आदमी का युद्ध" (बेलम ओमनिअम कोंट्रा ओमनेस) होता है। इसमें कोई उद्योग, कोई संस्कृति, कोई समाज नहीं होता, केवल "लगातार डर, और हिंसक मौत का खतरा" होता है। इस अवस्था में, न्याय, अन्याय, सही और गलत जैसी अवधारणाएं मौजूद नहीं होती हैं, क्योंकि उन्हें परिभाषित करने के लिए कोई कानून नहीं होता। प्रत्येक व्यक्ति को अपना जीवन बचाने के लिए जो कुछ भी आवश्यक हो वह करने का "प्राकृतिक अधिकार" होता है।

b. मानव स्वभाव **(**भौतिकवाद और अहंवाद**)**

- परिभाषा: हॉब्स ने मनुष्यों को मौलिक रूप से स्वार्थी, जुनून (विशेष रूप से शक्ति की इच्छा और मृत्यु का डर) से प्रेरित, और लगातार अपनी इच्छाओं को पूरा करने और दर्द से बचने की तलाश में देखा।
- व्याख्या: उनका मानना था कि मनुष्य मुख्य रूप से भौतिक प्राणी हैं, जिनके विचार और कार्य भौतिक गतियों और संवेदी अनुभवों का परिणाम हैं। हालांकि तर्क करने में सक्षम हैं, उनकी मूलभूत प्रेरणा आत्म-संरक्षण और व्यक्तिगत संतुष्टि की खोज है। मानव स्वभाव का यह अहंवादी और निराशावादी दृष्टिकोण एक मजबूत संप्रभु के लिए उनके तर्क का आधार बनता है, क्योंकि उनका मानना था कि बाहरी नियंत्रण के बिना, मनुष्य अनिवार्य रूप से टकराएंगे।

c. प्राकृतिक नियम **(**तर्क के सिद्धांत**)**

- परिभाषा: ये "सिद्धांत, या सामान्य नियम हैं, जो तर्क से पाए जाते हैं, जिसके द्वारा एक आदमी को वह करने से मना किया जाता है जो उसके जीवन के लिए विनाशकारी है, या उसे बचाने के साधनों को दूर करता है; और उसे छोड़ने से जिसे वह सोचता है कि इसे सबसे अच्छी तरह से संरक्षित किया जा सकता है।"
- व्याख्या: हालांकि प्राकृतिक अवस्था अराजक है, तर्क व्यक्तियों को कुछ "प्राकृतिक नियम" खोजने की ओर ले जाता है जो आत्म-संरक्षण को बढ़ावा देते हैं। मौलिक कानून शांति खोजना और उसका पालन करना है। अन्य कानूनों में यदि अन्य ऐसा करने को तैयार हों तो सभी चीजों पर अपना प्राकृतिक अधिकार छोड़ने को तैयार रहना, और समझौतों (covenants) का पालन करना शामिल है। हालांकि, ये कानून उन्हें लागू करने के लिए एक सामान्य शक्ति के बिना अप्रभावी होते हैं, क्योंकि व्यक्ति एक-दूसरे पर उनका पालन करने के लिए भरोसा नहीं कर सकते।

d. सामाजिक अनुबंध

- परिभाषा: सामाजिक अनुबंध व्यक्तियों के बीच एक समझौता है जिसमें वे शांति, व्यवस्था और सुरक्षा के बदले में अपने प्राकृतिक अधिकारों को एक एकल, निरंकुश संप्रभु शक्ति को स्वेच्छा से छोड़ (हस्तांतरित) देते हैं।
- व्याख्या: प्राकृतिक अवस्था की असहनीय भयावहता का सामना करते हुए, तर्कसंगत व्यक्ति महसूस करते हैं कि इससे बचने का एकमात्र तरीका अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता को एक सर्वशक्तिमान प्राधिकरण को परस्पर आत्मसमर्पण करने के लिए सहमत होना है। अधिकारों का यह हस्तांतरण पूर्ण और अपरिवर्तनीय है। एक बार संप्रभु स्थापित हो जाने के बाद, विषयों को विद्रोह करने या अनुबंध तोड़ने का कोई अधिकार नहीं होता है, क्योंकि ऐसा करने से समाज फिर से प्राकृतिक अवस्था में डूब जाएगा।

e. निरंकुश और अविभाज्य संप्रभुता

- परिभाषा: सामाजिक अनुबंध द्वारा बनाई गई संप्रभु शक्ति निरंकुश, अविभाज्य और अप्रतिरोध्य होनी चाहिए। यह एक सम्राट (हॉब्स की प्राथमिकता), एक अभिजात वर्ग (aristocracy), या एक लोकतंत्र हो सकता है, लेकिन इसकी शक्ति कुल और निर्विवाद होनी चाहिए।
- व्याख्या: सामाजिक अनुबंध को प्रभावी बनाने और शांति बनाए रखने के लिए, संप्रभु के पास निर्विवाद अधिकार होना चाहिए। इसकी शक्ति को विभाजित नहीं किया जा सकता (उदाहरण के लिए, राजा और संसद के बीच, या चर्च और राज्य के बीच) क्योंकि विभाजन से संघर्ष होता है और राज्य कमजोर होता है। संप्रभु अंतिम कानून निर्माता, न्यायाधीश और प्रवर्तक होता है। उसके आदेश कानून होते हैं, और उसका प्राथमिक कर्तव्य आंतरिक शांति और बाहरी रक्षा बनाए रखना है।

f. स्वतंत्रता **(**कानून के तहत स्वतंत्रता**)**

- परिभाषा: हॉब्स के लिए, स्वतंत्रता केवल "बाहरी बाधाओं की अनुपस्थिति" है। एक नागरिक समाज में, इसका अर्थ है वह करने की स्वतंत्रता जो कानून द्वारा निषिद्ध नहीं है।
- व्याख्या: एक नागरिक समाज में व्यक्ति उन सभी क्षेत्रों में कार्य करने के लिए स्वतंत्र होते हैं जहाँ संप्रभु के कानून मौन होते हैं। हालांकि, वे संप्रभु के आदेशों का उल्लंघन करने के लिए स्वतंत्र नहीं होते हैं, क्योंकि ऐसा करने से सामाजिक अनुबंध कमजोर होगा और अराजकता में लौट आएगा। उन्होंने व्यक्तिगत अधिकारों या स्वतंत्रताओं के विचार को खारिज कर दिया जो संप्रभु की शक्ति को बाधित कर सकते हैं, यह तर्क देते हुए कि ऐसे दावे राज्य को अस्थिर कर देंगे। हॉब्स के लिए सुरक्षा, आवश्यक रूप से व्यापक व्यक्तिगत स्वतंत्रता को कम करती है।

4. सभी पुस्तकें और निबंध

हॉब्स के प्रमुख दार्शनिक और राजनीतिक कार्य उनके विचार का एक व्यवस्थित प्रतिपादन हैं।

a. एलिमेंट्स ऑफ लॉ**,** नेचुरल एंड पॉलिटिक **(**कानून के तत्व**,** प्राकृतिक और राजनीतिक**)**

- प्रकाशन का वर्ष: 1640 ई. में लिखा गया (शुरुआत में निजी तौर पर प्रसारित, बाद में उनकी पूरी सहमति के बिना 1650 में दो भागों में प्रकाशित: ह्यूमन नेचर और डी कॉर्पोरे पॉलिटिको)।
- सारांश: हॉब्स के राजनीतिक दर्शन का उनका सबसे प्रारंभिक व्यवस्थित उपचार, डी सिवे और लेवियाथन से पहले। यह गति और सनसनी के सिद्धांतों का उपयोग करते हुए मानव स्वभाव, प्राकृतिक अवस्था, प्राकृतिक नियमों और निरंकुश संप्रभुता की आवश्यकता पर उनके विचारों को रेखांकित करता है। इसे अंग्रेजी गृहयुद्ध से पहले की राजनीतिक अशांति के जवाब में लिखा गया था, जिसका उद्देश्य संसद को राजा का समर्थन करने के लिए राजी करना था।

b. डी सिवे **(**नागरिक पर**)**

- प्रकाशन का वर्ष: पहली बार लैटिन में 1642 ई. में प्रकाशित; संशोधित संस्करण 1647; अंग्रेजी अनुवाद 1651।
- सारांश: एक नियोजित दार्शनिक त्रयी (दर्शन के तत्व, जिसमें भौतिकी पर डी कॉर्पोरे और मानव स्वभाव पर डी होमिने भी शामिल थे) का दूसरा भाग। डी सिवे विशेष रूप से उनके दर्शन के सामाजिक और राजनीतिक पहलुओं

पर केंद्रित है। यह नागरिक समाज की आवश्यकता, प्राकृतिक अवस्था, सामाजिक अनुबंध और संप्रभु की निरंकुश शक्ति के लिए उनके तर्कों को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करता है। यह बढ़ते गृहयुद्ध के बीच व्यवस्था के लिए एक तत्काल दलील थी।

c. लेवियाथन**,** या एक कॉमन**-**वेल्थ इक्लेसियास्टिकल एंड सिविल का मामला**,** रूप और शक्ति

- प्रकाशन का वर्ष: 1651 ई.
- सारांश: हॉब्स का सबसे प्रसिद्ध और व्यापक कार्य। यह उनके पूर्ण राजनीतिक दर्शन को अत्यधिक संरचित और शक्तिशाली तरीके से प्रस्तुत करता है। पुस्तक उनके भौतिकवादी मनोविज्ञान और मानव स्वभाव के प्रतिपादन के साथ शुरू होती है, फिर प्राकृतिक अवस्था और प्राकृतिक नियमों का वर्णन करने के लिए आगे बढ़ती है, फिर सामाजिक अनुबंध और निरंकुश संप्रभु ("लेवियाथन") की विशेषताओं का विवरण देती है। यह नागरिक और धार्मिक शक्ति के बीच संबंध पर भी विस्तार से चर्चा करता है, एकता और शांति के लिए चर्च को संप्रभु के अधीन करने के लिए तर्क देता है। शीर्षक पृष्ठ पर राक्षसी समुद्री जीव (लेवियाथन) अराजक मानवीय जुनून को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक शक्तिशाली, सर्वव्यापी राज्य का प्रतीक है।

d. बेहेमोथ**,** या द लॉन्ग पार्लियामेंट

- प्रकाशन का वर्ष: 1668 ई. में लिखा गया; पहली बार मरणोपरांत 1681 ई. में प्रकाशित (उनकी इच्छा के विरुद्ध, शाही प्रतिबंध के बाद)।
- सारांश: यह कार्य हॉब्स के दृष्टिकोण से अंग्रेजी गृहयुद्ध का एक ऐतिहासिक विवरण और विश्लेषण है, जो एक संवाद के रूप में लिखा गया है। लेवियाथन के विपरीत, जो सैद्धांतिक है, बेहेमोथ वास्तविक ऐतिहासिक घटनाओं पर उनके सिद्धांतों का एक व्यावहारिक अनुप्रयोग है। वह गृहयुद्ध के कारणों को राजशाही की कमजोरी, विश्वविद्यालयों और प्रेस्बिटेरियन पादरियों के विभाजनकारी प्रभाव, और संप्रभुता की वास्तविक प्रकृति के बारे में लोगों की सामान्य अज्ञानता के रूप में पहचानते हैं। यह विभाजित शक्ति के परिणामों के बारे में एक गंभीर चेतावनी के रूप में कार्य करता है।

5. उद्धरण और उनकी व्याख्या

हॉब्स के कार्यों में राजनीतिक दर्शन में कुछ सबसे यादगार और कठोर कथन शामिल हैं।

1. "होमो होमिनी ल्यूपस।" (मनुष्य मनुष्य के लिए भेड़िया है।)
   - स्रोत: डी सिवे, समर्पण।
   - व्याख्या: यह लैटिन वाक्यांश प्राकृतिक अवस्था में मानव स्वभाव के हॉब्स के निराशावादी दृष्टिकोण को पूरी तरह से समाहित करता है। यह सुझाव देता है कि कानून और सरकार की बाधाओं के बिना, मनुष्य स्वाभाविक रूप से एक-दूसरे के प्रति आक्रामक और शिकारी होते हैं, जैसे भेड़िये। यह उस गहरे अविश्वास और प्रतिस्पर्धा को रेखांकित करता है जो एक संप्रभु के बिना जीवन की विशेषता होगी।
2. "जिस समय तक मनुष्य एक सामान्य शक्ति के बिना रहते हैं जो उन सभी को भयभीत रख सके, वे उस स्थिति में होते हैं जिसे युद्ध कहा जाता है; और ऐसा युद्ध, जैसा कि हर आदमी के खिलाफ हर आदमी का होता है... और मनुष्य का जीवन, एकाकी, गरीब, बुरा, पाशविक और छोटा होता है।"
   - स्रोत: लेवियाथन, अध्याय XIII।
   - व्याख्या: यह निस्संदेह प्राकृतिक अवस्था का हॉब्स का सबसे प्रसिद्ध और भयावह वर्णन है। यह सभ्यता, सुरक्षा और मानव विकास से रहित जीवन को स्पष्ट रूप से चित्रित करता है, जो लगातार भय और हिंसक मौत के खतरे से हावी होता है। यह व्यक्तियों के लिए एक निरंकुश संप्रभु द्वारा शासित नागरिक समाज में शरण लेने के लिए अंतिम औचित्य प्रदान करता है।
3. "तलवार के बिना समझौते, केवल शब्द हैं, और एक आदमी को बिल्कुल भी सुरक्षित रखने की कोई ताकत नहीं है।"
   - स्रोत: लेवियाथन, अध्याय XVII।

- व्याख्या: यह कथन सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने में जबरदस्ती शक्ति की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर देता है। हॉब्स तर्क देते हैं कि समझौते (कवच या अनुबंध), यहां तक कि स्वयं सामाजिक अनुबंध भी, तब तक अर्थहीन हैं जब तक उन्हें लागू करने के लिए कोई शक्तिशाली संप्रभु ("तलवार") न हो। दंड के खतरे के बिना, व्यक्ति अनिवार्य रूप से अपने वादों को तोड़ेंगे और स्वार्थी रूप से कार्य करेंगे, जिससे अराजकता में लौट आएंगे। यह कानून और समाज के प्रभावी कामकाज के लिए निरंकुश शक्ति की आवश्यकता को उजागर करता है।

4. "विषयों का संप्रभु के प्रति दायित्व तब तक और तब तक ही समझा जाता है, जब तक वह शक्ति रहती है जिसके द्वारा वह उनकी रक्षा करने में सक्षम होता है।"
   - स्रोत: लेवियाथन, अध्याय XXI।
   - व्याख्या: निरंकुश संप्रभुता की वकालत करते हुए भी, हॉब्स सूक्ष्मता से एक सीमा भी प्रस्तुत करते हैं: संप्रभु की वैधता उसकी सुरक्षा प्रदान करने की क्षमता पर निर्भर करती है। यदि संप्रभु अपने विषयों की रक्षा नहीं कर सकता है, तो उनकी आज्ञाकारिता का दायित्व समाप्त हो जाता है। यह सामाजिक अनुबंध के लिए एक व्यावहारिक, न कि विशुद्ध रूप से नैतिक, आधार और राज्य के विघटन के लिए एक संभावित (हालांकि हॉब्स के विचार में बहुत दुर्लभ) औचित्य का सुझाव देता है।

6. आजीवन प्रमुख उपलब्धियां और राजनीति विज्ञान या सिद्धांत में योगदान

हॉब्स के कट्टरपंथी और व्यवस्थित दृष्टिकोण ने राजनीतिक दर्शन को बदल दिया।

- आधुनिक राजनीतिक दर्शन/विज्ञान के संस्थापक: उन्हें व्यापक रूप से पहले राजनीतिक दार्शनिकों में से एक माना जाता है जिन्होंने धार्मिक या पारंपरिक नैतिक मान्यताओं पर निर्भर रहने के बजाय मानव स्वभाव और तर्क के मौलिक सिद्धांतों से एक राजनीतिक सिद्धांत का निर्माण किया।
- सामाजिक अनुबंध सिद्धांत के प्रणेता: लॉक और रूसो के साथ, हॉब्स सामाजिक अनुबंध सिद्धांत में एक मूलभूत व्यक्ति हैं। उनके अद्वितीय सूत्रीकरण - जहां व्यक्ति अपरिवर्तनीय रूप से एक निरंकुश संप्रभु को अधिकार सौंपते हैं - ने सरकार की उत्पत्ति और वैधता पर सदियों की बहस के लिए मंच तैयार किया।
- निरंकुश संप्रभुता की अवधारणा: उन्होंने शांति और व्यवस्था के लिए आवश्यक निरंकुश, अविभाज्य संप्रभुता की अवधारणा को कठोरता से परिभाषित और बचाव किया। एक मजबूत केंद्रीय शक्ति के लिए उनके तर्कों ने राज्य की प्रकृति पर बाद के विचारकों को प्रभावित किया।
- राजनीतिक अधिकार के लिए धर्मनिरपेक्ष आधार: हॉब्स ने तर्क दिया कि राजनीतिक अधिकार आत्म-संरक्षण की तलाश करने वाले व्यक्तियों की सहमति से प्राप्त होता है, न कि दिव्य अधिकार या अंतर्निहित प्राकृतिक व्यवस्था से। राजनीतिक विचार का यह कट्टरपंथी धर्मनिरपेक्षता अत्यधिक प्रभावशाली था, जिसने ज्ञानोदय के विचारकों के लिए मार्ग प्रशस्त किया।
- व्यवस्था और सुरक्षा पर जोर: उनका प्राथमिक योगदान राज्य के सर्वोपरि लक्ष्यों के रूप में शांति और सुरक्षा को उजागर करना था। उन्होंने एक compelling तर्क प्रदान किया कि सामूहिक सुरक्षा की बड़ी भलाई के लिए व्यक्तिगत स्वतंत्रता को कभी-कभी कम किया जाना चाहिए।
- पद्धतिगत नवाचार: उन्होंने राजनीतिक दर्शन में एक वैज्ञानिक, निगमनात्मक विधि (ज्यामिति से प्रेरित) को लागू करने का प्रयास किया, मानव व्यवहार और राजनीतिक संगठन के सार्वभौमिक नियमों की तलाश की।

7. विवाद या आलोचनाएँ

हॉब्स के कट्टरपंथी विचारों ने उनके पूरे जीवन और उसके बाद भी भारी विवाद उत्पन्न किया।

- नास्तिकता और अधार्मिकता के आरोप (स्रोत: धार्मिक पादरी, विश्वविद्यालय, रॉयलिस्ट, सांसद): उनकी भौतिकवादी दर्शन, धर्म को राज्य नियंत्रण में कम करना, और चमत्कारों और पारंपरिक दिव्य अधिकार के प्रति उनके संदेह ने एंग्लिकन और प्यूरिटन पादरियों दोनों से नास्तिकता और अधार्मिकता के व्यापक आरोपों को जन्म दिया।

- आलोचना का विवरण: आलोचकों का मानना था कि लेवियाथन ईसाई धर्म को कमजोर करता है, ईश्वर की शक्ति को तर्क और मानवीय व्याख्या के अधीन करके, और यह सुझाव देकर कि सच्चा धर्म सार्वजनिक पूजा के संबंध में संप्रभु के आदेशों का मात्र पालन था। स्वतंत्र इच्छा पर उनके विचार भी धार्मिक सिद्धांतों के साथ टकराए।
- प्रति-तर्क/हॉब्स का बचाव: हॉब्स ने लगातार नास्तिक होने से इनकार किया, एक अच्छे ईसाई होने का दावा किया। उन्होंने तर्क दिया कि उनका दर्शन ईश्वर को नकारता नहीं था, बल्कि ईश्वर की शक्ति को इस तरह से परिभाषित करने की कोशिश करता था जो नागरिक अधिकार का समर्थन करता था, धार्मिक विवादों को गृहयुद्ध में बदलने से रोकता था। उनका मानना था कि उनके विचार शांति के लिए आवश्यक थे, जो स्वयं एक दिव्य आज्ञा थी।

- निरंकुश राजशाही और अत्याचार का बचाव (स्रोत: सीमित सरकार के समर्थक, संसदीय शक्ति, उदारवादी विचारक): एक निरंकुश, अविभाज्य संप्रभु के लिए उनकी वकालत की उन लोगों द्वारा कड़ी आलोचना की गई जिन्होंने संसदीय संप्रभुता, संवैधानिकवाद और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का समर्थन किया।
  - आलोचना का विवरण: आलोचकों ने तर्क दिया कि हॉब्स का सिद्धांत अत्याचार को उचित ठहराता है, विषयों को अपने शासक के खिलाफ सभी अधिकारों से वंचित करता है और उन्हें मनमानी शक्ति के प्रति संवेदनशील छोड़ देता है। उनका मानना था कि उन्होंने सुरक्षा के लिए स्वतंत्रता का बलिदान किया, जिससे एक राज्य बहुत शक्तिशाली और दमनकारी हो गया। जॉन लॉक, उदाहरण के लिए, ने हॉब्स का सीधा खंडन किया, यह तर्क देते हुए कि व्यक्ति नागरिक समाज में भी कुछ अयोग्य अधिकारों को बनाए रखते हैं।
  - प्रति-तर्क/हॉब्स का बचाव: हॉब्स ने तर्क दिया कि निरंकुश शक्ति का विकल्प गृहयुद्ध था, जिसे उन्होंने सबसे बड़ी बुराई माना। उनका मानना था कि एक अत्याचारी संप्रभु भी प्राकृतिक अवस्था की अराजकता से बेहतर था। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि एक संप्रभु का स्वार्थ उन्हें प्रभावी ढंग से शासन करने और शांति प्रदान करने के लिए प्रेरित करेगा, क्योंकि उनकी शक्ति एक समृद्ध और स्थिर आबादी पर निर्भर करती थी।
- मानव स्वभाव का निराशावादी दृष्टिकोण (स्रोत: ज्ञानोदय के दार्शनिक, बाद के मानवतावादी): मनुष्यों को स्वाभाविक रूप से स्वार्थी और आक्रामक के रूप में उनका उदास चित्रण उन लोगों से आलोचना का पात्र बना जिन्होंने मानवीय परोपकार या नैतिक प्रगति की क्षमता में विश्वास किया था।
  - आलोचना का विवरण: इस दृष्टिकोण को मानवीय गरिमा और बाहरी दबाव के बिना सहयोग की क्षमता को कमजोर करने वाला माना गया।
  - प्रति-तर्क: हॉब्स तर्क देंगे कि उनका दृष्टिकोण केवल यथार्थवादी था, जो मानव व्यवहार के अवलोकन पर आधारित था, खासकर संघर्ष के समय में।

8. प्रमुख जीवन घटनाओं और राजनीतिक योगदानों की समयरेखा (वर्ष-वार)

- 1588: वेस्टपोर्ट, विल्टशायर में जन्म।
- 1603: ऑक्सफोर्ड के मैग्डलीन हॉल में प्रवेश।
- 1608: ऑक्सफोर्ड से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और विलियम कैवेंडिश (भविष्य के डेवोनशायर के दूसरे अर्ल) के ट्यूटर बने।
- 1610-1615: यूरोप का पहला ग्रैंड टूर, वैज्ञानिक और दार्शनिक विकास का सामना करना पड़ा।
- 1628: थ्यूसीडाइड्स के पेलेपोनेसियन युद्ध का इतिहास का अपना अनुवाद प्रकाशित किया।
- 1629-1631: यूरोप का दूसरा ग्रैंड टूर।
- 1634-1637: यूरोप का तीसरा ग्रैंड टूर, इटली में गैलीलियो से मिले और पेरिस में मर्सिन के सर्कल से जुड़े, डेसकार्टेस से जुड़े।
- 1640: एलिमेंट्स ऑफ लॉ, नेचुरल एंड पॉलिटिक प्रकाशित किया। अपने रॉयलिस्ट भावनाओं के लिए उत्पीड़न के डर से, वे पेरिस भाग गए, जिससे 11 साल का स्व-निर्वासन शुरू हुआ।
- 1642: डी सिवे (लैटिन संस्करण) प्रकाशित किया। अंग्रेजी गृहयुद्ध शुरू होता है।
- 1646-1648: पेरिस में निर्वासित वेल्स के राजकुमार (भविष्य के चार्ल्स द्वितीय) के गणित ट्यूटर बने।

- 1651: लंदन में लेवियाथन प्रकाशित किया। इसके विवादास्पद विचारों ने पेरिस में रॉयलिस्ट और सांसद दोनों को अलग कर दिया, जिससे उन्हें इंग्लैंड लौटने के लिए मजबूर होना पड़ा।
- 1655: डी कॉर्पोरे (भौतिकी पर) प्रकाशित किया।
- 1658: डी होमिने (मानव स्वभाव पर) प्रकाशित किया।
- 1660: इंग्लैंड में राजशाही बहाल हुई; चार्ल्स द्वितीय, उनके पूर्व शिष्य, ने उन्हें पेंशन प्रदान की।
- 1666: संसद ने नास्तिकता के आरोपों के कारण लेवियाथन पर प्रतिबंध लगाने पर विचार किया, लेकिन यह उपाय पारित नहीं हुआ। हॉब्स को कम विवादास्पद कार्यों को प्रकाशित करने की सलाह दी गई।
- 1668: बेहेमोथ, अंग्रेजी गृहयुद्ध का एक इतिहास, पूरा किया, लेकिन उनके जीवनकाल के दौरान इसे प्रकाशित करने पर प्रतिबंध लगा दिया गया था।
- 1679 (4 दिसंबर): हार्डविक हॉल, डर्बीशायर में 91 साल की उम्र में निधन।

9. कम ज्ञात तथ्य या उनके व्यक्तित्व या कार्य के अद्वितीय पहलू

- भय से जन्म: स्पेनिश आर्मडा के डर के कारण उनकी माँ के समय से पहले जन्म लेने के बारे में उनका प्रसिद्ध किस्सा उस भय के विषय को रेखांकित करता है जो उनके दर्शन में व्याप्त है।
- देर से फलने-फूलने वाले: हालांकि प्रतिभाशाली, उनके प्रमुख दार्शनिक कार्य उनके जीवन में अपेक्षाकृत देर से प्रकाशित हुए थे, विशेष रूप से लेवियाथन जब वे 63 वर्ष के थे।
- गणितीय खोज: उन्होंने प्रसिद्ध रूप से वर्ग को चौकोर करने और अन्य गणितीय प्रयासों में संलग्न होने का प्रयास किया, जिससे कभी-कभी उनके समय के प्रमुख गणितज्ञों के साथ तीखे और शर्मनाक सार्वजनिक विवाद हुए। यह ज्यामिति की कठोरता के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है, भले ही उनके अनुप्रयोग त्रुटिपूर्ण थे।
- असाधारण दीर्घायु: 17वीं शताब्दी में 91 वर्ष की आयु तक जीवित रहना उल्लेखनीय था, जिससे उन्हें कई पीढ़ियों में महत्वपूर्ण राजनीतिक और बौद्धिक बदलाव देखने को मिले।
- जॉन ब्राम्हॉल के साथ प्रतिद्वंद्विता: उन्होंने स्वतंत्र इच्छा और अमूर्त आत्माओं के अस्तित्व जैसे विषयों पर एंग्लिकन बिशप जॉन ब्राम्हॉल के साथ व्यापक सार्वजनिक और लिखित बहसों में भाग लिया, इन मामलों पर उनके विवादास्पद रुख को उजागर करते हुए।
- बुद्धि के लिए प्रतिष्ठा: अपने दर्शन की bleakness के बावजूद, हॉब्स को उनके सामाजिक हलकों में उनकी बुद्धि, हास्य और आकर्षक बातचीत के लिए जाना जाता था।